छात्र से सामाजिक कार्यकर्ताः एक सफर

– हिमांशु कुमार

तिथि : 14 मई 2011

स्थानः आई.आई.सी., नई दिल्ली

विजय प्रताप : मैं अध्यक्ष का परिचय दे देता हूं। उसके बाद सब अपना–अपना परिचय देंगे। अध्यक्ष जी जब बिहार आंदोलन हुआ तब इंजीनियर थे और बिहार आंदोलन के बाद जब सत्ता आई तो बीच में काफी समय वो सरकारी मेहमान थे आपात स्थिति के दौरान किस–किस जेल में गये वो मुझे याद नहीं है वो सुरेन्द्र जी खुद ही बताएंगे। उसके बाद से वो सामाजिक कार्यकर्ता हो गए। वो मुजफ्फरपुर के रहने वाले हैं। तो हमारा उनका रिशता तो आप समझ सकते हैं कि हम भी जेपी आंदोलन के कार्यकर्ता थे तो इतने दशकों से इनका हमारा रिशता है तो जैसे व्यस्त नेता लोग होते हैं वैसे ही सुरेन्द्र जी भी हैं इसलिए काफी दबाव बनाकर कभी–कभी हमें इनका समय मिलता है और अभी जो गांधी आंदोलन की तमाम संस्थाएं और संगठन है उनमें जो एक नेतृत्व परिवर्तन हो रहा है, युवा पीढ़ी गांधी शांति प्रतिष्ठान में वो काफी समय से हुआ था। राजगोपाल यंग लोगों में से थे फिर अनुपम जी बने थे अनुपम जी और सुरेन्द्र जी तो हम लोगों को तो सर्वोदय और समाजवादी आंदोलन में, मैं मजाक में कहता हूं कि 60 साल के बाद ही हमारे नेता लोग हमें व्यस्क मानते हैं लेकिन सुरेन्द्र जी को 60 से थोड़ा पहले ही मान लिया गया है तो जब से ये गांधी शांति प्रतिष्ठान में सचिव बने हैं। तब से बाकी 16 सेंटर में क्या हो रहा है उसके बारे में मैं नहीं कह सकता हूं लेकिन दिल्ली में गांधी शांति प्रतिष्ठान जो एक जीवंतता का अड्डा बना है और उसमें

जिस तरह की एक जान आई है और वो बाकी कितना कर पाते हैं वो तो व्यापक आंदोलन की स्थिति है उसके हिसाब से तय होगा लेकिन अपने आप में जो संस्थाएं अपनी भीतर की ऊर्जा से जो एक फर्क ला सकती हैं। वो फर्क आजकल गांधी शांति प्रतिष्ठान में देखने में आता है। आज के इस सत्र के मुख्य वक्ता हिमांशु जी हैं और हिमांशु जी जैसे कि आप जानते हैं वो दंतेवाड़ा में काफी समय से कार्यरत्त रहे। और पहले माओवादियों से इनको प्रतिरोध सहना पड़ा और फिर वहां की व्यवस्था और पुलिस ने इनके आश्रम को किस तरह तहस–नहस किया तो उसके बारे में तमाम मंचों में हिमांशु जी को साथियों ने सुना है आज की बैठक में हम उनके अनुभवों को रिकार्ड करके एक पुस्तिका बनाना चाहते हैं कि एक कार्यकर्ता कैसे बनता है और उसको किस तरह की दिक्कतें आती हैं। इन सवालों पर और भी जो चीजें हैं इसमें पहले क्या–क्या हुआ उसका जिक्र भर में कर देता हूं। जैसे हम एक पत्रिका निकालते थे कार्यकर्ता समाज में 80 से लेकर 94–95 तक चली 'लोकायन' नाम से उसमें अक्सर कार्यकर्ता लोग अपनी इस तरह की चीजें घनश्याम अपने एक साथी हैं एनजीओ आंदोलन समूहों का क्या रिश्ता है इसपर उनका एक लेख छपा जो काफी चर्चा में रहा। उसके बाद रघुपति जी बिहार आंदोलन की संघटन संचालन समिति में थे। तो कार्यकर्ता की जो वित्तीय दिक्कतें हैं और जीवन यापन के जो सवाल हैं उनपर वो उनका लेख छपा था तो उस सिलसिले को हम फिर से देश में जो भ्रष्टाचार के खिलाफ एक माहौल बना है तो राजनैतिक कार्यकर्ताओं का ईमानदारी से इज्जतपूर्ण ढंग से जीवन यापन हो सके और वो अपने गृहस्थी को क्योंकि सब लोगों के लिए संभव नहीं है एकादश व्रत का पालन करें और जीवन भर शादी न करें ब्रहमर्चाय व्रत का पालन करें। एक सामान्य सहज नागरिक के लिए क्या ईमानदार रहते हुए समाज उसके योगक्षेम की जिम्मेवारी ले सकता है–नहीं ले सकता है। इसमें सुरेन्द्र जी ने और हिमांशु जी ने वास्तव में जीवन में अनुभव संजोए हैं और वो अनुभव पूरे समाज की थाती बनें इसके लिए हमने चाहा कि सुरेन्द्र जी आज अध्यक्षता करें और हिमांशु जी हमारे बीच वक्तव्य दें। और ये अनौपचारिक है और जो हम छापेंगे वो इनको दिखाने के बाद ही छापा जाएगा उसमें बोलने और लिखने में जो भी फर्क होता है उसमें जो

भी चीजें आप जोड़ना चाहेंगे और इस तरह की और भी सामग्री। क्योंकि सुरेन्द्र जी आजकल ऐसे केन्द्र में हैं कि जहां तरह–तरह के जो पॉलिटिक्ल सरपलस लेबर है जो संगठनों की शिथिलता के कारण और अपने भीतर की आग के कारण समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो चमचागिरी, दलाली, इस तंत्र से दूर रहकर अपने सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त करना चाहते हैं और ऐसे लोगों के लिए मंच नहीं है तो जिस स्थान पर और जिस सामाजिक पुण्य के प्रतीक हैं गांधी शांति प्रतिष्ठान और उसके सचिव उसकी वजह से इनके पास ऐसा बहुत है तो हम चाहेंगे कि श्रृंखला में अगर आज बात पूरी न हो पाए तो आगे भी इस काम में सुरेन्द्र जी का योगदान रहे। मैं इस काम में सुरेन्द्र जी और हम ऐसे 10–20 कार्यकर्ताओं का प्रोफाइलिंग करते हुए साल के काम से अगर एक पुस्तक निकाल सकते हों तो मुझे लगता है कि तो मुझे लगता है कि जब हम लोगों ने शुरू किया था 18–20 साल की उम्र से उस पीढ़ी के बच्चों के लिए कुछ चीज उपलब्ध हो जाए ये आज की पीढ़ी का उद्देश्य है। और मेरी जो अनौपचारिक बात हुई है इसमें सुरेन्द्र जी और हिमांशु जी इस उद्देश्य के मार्ग को जाहिर है कि वो खुद इस बिरादरी के मजबूत पाए हैं तो वो मानते हैं तो अब मैं सुरेन्द्र जी को आगे की कार्यवाही चलाने के लिए आग्रह करूंगा।

सुरेन्द्र जी : सभी का स्वागत है हम लोग अपना–अपना परिचय अपने–अपने स्थान से देंगे

मेरा नाम **विजय प्रताप** दिल्ली में रहता हूं। मेरा नाम विजय प्रताप मैं दिल्ली में रहता हूं मेरा नाम **सांई बाबा** मैं जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी। मेरा नाम **अकेशवर अपी** है मैं अन्तरराष्ट्रीय रेड क्रास के लिए कमयुनिकेशन ऑफिसर हूं छत्तीसगढ़ में। मेरा नाम **शमित** है मैं दिल्ली में काम करता हूं मैं क्राई नाम के एजीओ के साथ काम करता हूं। **जितेन्द्र कुमार शानू** इगनू में अकेडिमिक कॉउंसलर हूं। मैं **उषा शर्मा** सीनियर कॉरस्पोंडर हूं। मेरा नाम **रीता** है मैं दिल्ली में प्रवासी लोगों के साथ काम करता हू। मेरा नाम **अजय कुमार**। मेरा **आर के यादव** मैं एक रचना नाम का डेवलपमेंट एनजीओ है जो कि एजूकेशन और हैल्थ के ऊपर काम करता है उसमें काम करता हूं। मेरा

नाम **सीता शर्मा** है रचना डेवलपमेंट एशोसिएन से हूं। **प्रदीप्त कुमार नायक** है मैं सेंटर फॉर फिलनथ्रोपी में काम करता हूं। मेरा नाम **गौरी शंकर** है। मेरा नाम **प्रमोद चावला** है हम दो काम करते हैं नेशनल नेटवर्क ऑफ इंडिया ट्रस्ट में एक क्रिमिनलाइजेश ऑफ पॉलिटिक्स में और दूसरा बिंग बेंग मनी स्टेंड। मैं **लिंगा,** छत्तीसगढ़ से अभी जनर्लिज्म की पढ़ाई पूरी की है और रहने वाले दंतेवाड़ा का। मैं **रजनीकांत मुदगल** सामाजिक कार्यकर्ता रहा और ज्यादातर जेपी आंदोलन में खासकर जनर्लिस्ट मूवमेंट में हिन्दुस्तान अखबार में यूनियन भी रहा और आजकल सेडेड से जुड़ा हूं।

सुरेन्द्र : हमारे बीच हमारे मुख्य वक्ता हिमांशु कुमार जी हैं जिनका अभी विजय प्रताप जी ने परिचय दिया। छत्तीसगढ के अंदर पिछले दिनों इन्होंने जो काम किया है जिस प्रकार शांति स्थापना के लिए ये प्रयत्नशील रहे उससे सरकार और माओवादी दोनों का प्रहार इन्हें झेलना पड़ा। हम इनका स्वागत करते हैं और इनसे प्रार्थना करते हैं कि ये अपनी बात हमारे सामने रखें। और फिर इनकी बातों के बाद उससे उठे प्रश्न और कमेंट हम आप लोगों से प्राप्त करेंगे।

हिमांशु कुमार : मुझे विजय प्रताप जी ने कहा कि आप जो हमेशा बोलते हैं वो आज नहीं बोलेंगे। तो मैं घबराया हुआ हूं कि क्या बोलूं। मुझे लगता है कि दूसरों को समझना तो आसान है लेकिन खुद को समझना कठिन है। मैं कई बार जब पीछे मुड़कर देखता हूं कि मैं जो आज यहां तक पहुंचा तो उसके पीछे क्या–क्या चीजें थी जो मुझे यहां ले आई यदि मैं फ्लैश बैक में जाऊं तो मुझे लगता है कि मैंने जो रास्ता चुना उसके पीछे जो ड्राइविंग फोर्सेस थी उसमें एक बड़ा कारण मेरा पारिवारिक माहौल था। मुझे लगता है कि यदि मैं इस परिवार में नहीं होता तो मैं वो नहीं होता जो मैं आज हूं। बचपन मैं देखता था कि हमारे पिताजी विनोबा जी के साथ भूदान आंदोलन में फुल टाइम काम करते थे। और जब होश संभाला तो देखा पिताजी कभी तीन महीने चार महीने में सिर्फ एक–दो दिन के लिए आते थे और हम अपने पिताजी को देखने के लिए तरसते रहते थे। तो जब पिताजी आते थे तो हमारी मां उनसे

झगड़ती रहती थी कि आप तो झोला उठाकर चल देते हैं चार–चार बच्चों का बोझ मेरे ऊपर डालकर। कि किसी के पास स्कूल ड्रेस नहीं है, फीस नहीं है, इसके कपड़े फट गए, इसके पास कॉपी नहीं है। पिताजी उनकी बात सुनकर हंसते रहते थे और फिर दो दिन बाद मैं देखता तो पिताजी फिर झोला उठाकर सुबह चल पड़ते थे। अब मैं सोचता हूं कि एक व्यक्ति के फोरमेशन में बहुत सारी चीजें बिना जाने असर डालती रहती हैं। उस वक्त तो ये पता नहीं चलता था कि कौन–कौन सी चीजें हमारे निमार्ण में असर डालती हैं। और अब याद आता है कि किन–किन लोगों का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ा तो उस समय पिताजी के मित्र जो उनके साथ आया करती थे हमारे घर में उनमें एक चंपा बहन थीं वैसे वे हिमाचल से थीं लेकिन उत्तर प्रदेश के देहरादून में उन्होंने बहुत काम किया। जौनसार, भाभर जो आदिवासी इलाके हैं वहां उन्होंने बहुत काम किया खासतौर से गांव के लोगों की शिक्षा के बारे में बहुत काम किया। बिल्कुल भूखे–प्यासे रह–रहकर स्कूल शूरू करते थे और जब वो स्कूल इंटर कॉलेज बन जाता था तो उसको सरकार को सौंप देते थे। फिर आगे बढ़ जाते थे और फिर दूसरा स्कूल शुरू कर देते थे। तो चंपा बहन जैसे कई संघर्षशील लोग जिनकी बिवाइयां फटी होती थी चप्पल टूटी, बिना प्रैस के कपड़े पहने हुए, एक झोला कंधे पर, बाल बिखरे हुए। और एक धुन में वो लोग काम करते थे। वो जब हमारे घर आया करते थे तो उस समय हम उनको देखते थे। तो आज जब हम पिछली बातों को याद करते हैं तो लगता है कि उनका भी कुछ प्रभाव हमपर पडा है। उसमें से एक हैं डॉ0 दयानिधि पटनायक, ये सब बडे अंगसंग हीरोज़ हैं। डॉ दयानिधि पटनायक पिताजी के दोस्त थे और वो अमेरिका में उन्होंने पढ़ाई की और इंटरनेश्नल लेवल के वो सांइटिस्ट थे। उनकी विलक्षणता के कारण उनको जहर दे दिया गया था और जहर के कारण उनपर इतना प्रभाव हुआ कि एगज़ीमा जगह–जगह हो गया और कई अन्य बीमारियां भी हो गई जिस वजह से उन्होंने नमक, घी, तेल सब छोड़ दिया था। मुझे याद है वो सिर्फ उबली सब्जी खाया करते थे। वो हमारे घर आया करते थे। बाद में उन्होंने अपनी नौकरी से रिज़ाइन किया उन्हें कलिंगा यूनिवर्सिटी, उड़ीसा की वाइस चांसलर शिप ऑफर की गई कहा गया कि आप यूनिवर्सिटी मत छोड़िए लेकिन उन्होंने वो

छोड़ा और वो विनोबा जी के साथ आ गए। विनोबा जी को ग्राम दान का डाक्टर कहा करते थे और डॉ दयानिधि की खासियत यह थी कि वो कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग बहुत अच्छी करते थे। और कार्यकर्ता को ऐसे ट्रेन्ड कर देते थे कि, एक सर्वोदय का कार्यकर्ता बड़े–बड़े प्रोफेसरों को चुप करा सकता था। वो सिखाते थे कि आधे घंटे का भाषण इस तरह से दिया जाता है, अगर तुम्हारे पास 10 मिनट हों तो उसका भाषण ऐसे दिया जा सकता है। और दो ही मिनट में बोलना हो तो दो मिनट का भाषण ये है। तो वो बाकायदा लिखकर रटवाते थे कि यही बोलना है इसके दांये–बायें नहीं जाना है। उनके साथ मैंने अंग्रेजी भी सीखी या कहिए जो कुछ थोड़ी अंग्रेजी मैंने सीखी मैं तो उत्तर प्रदेश में हिन्दी मीडियम से पढ़ा हुआ आदमी हूं वो कहा करते थे कि तुम मुझे अंग्रेजी में ही लैटर लिखोगे। हमारे परदादा पंडित बिहारी लाल स्वामी दयानंद जी के प्रथम शिष्य थे उत्तर प्रदेश में। और स्वामी जी जब उत्तर प्रदेश आते थे तो वो हमारे यहां पर ठहरते थे और हमारे ताऊजी पंडित ब्रह्म प्रकाश शर्मा वो समाजवादी थे नेहरू जी के सीनियर कुलीग रहे बाद में समाजवादी उसमें चन्द्रशेखर जी, राजनारायण जी काफी–काफी दिन तक जब अंडरग्राउंड हो जाते थे तब वो छिपने के लिए हमारे घर में ही आते थे, 1942 में और हमारी दादीजी उन्हें गोप कहा करती थी क्योंकि वो बहुत मोटे थे। पिताजी ने सन् 42 में मुजफ्फरनगर रेलवे स्टेशन को आग लगा दी थी और उसके बाद फरार हो गए थे। फिर गांधी जी के साथ पत्र व्यवहार हुआ तो गांधी जी ने उन्हें सेवाग्राम बुला लिया तो वो वहां रहे। 1946 में तो गांधीजी निकल गए थे वहां से और उसके बाद लौटे ही नहीं वहां। उसके बाद सर्वोदय मूवमेंट में पिताजी चले गए। ये जो सब बैकग्राउंड था और हम जब थोड़ा और बढ़े तो वो सर्वोदय मूवमेंट के टूटने का दौर था सर्वोदय मूवमेंट बिखर रहा था जब सर्वोदय मूवमेंट टूट रहा था। जेपी आंदोलन करीब–करीब समाप्त हो गया था। इंदिरा गांधी हटी थीं लेकिन फिर आ गई थीं और जे पी मूवमेंट के बहुत सारे लोग पॉलिटिकल पार्टीज में चले गए थे तो वो आंदोलन भी टूट गया और सर्वोदय आंदोलन भी समाप्त हो गया था। मुझे याद है जब बचपन में पिताजी वगैरह घर आया करते थे वो जो चिट्ठियां सबको भेजते थे मैं वो चिट्ठियां रटा करता था। वो हजारों की संख्या में

पोस्टकार्ड भेजा करते थे। और उसमें कोई स्टेटमेंट होता था सर्वोदयी तो मैं उनको रटा करता था। और ऐसा लगता था उस वक्त उनके जुनून को देखकर के आजादी के बाद जो नये भारत का निमार्ण होना है उसे करे बिना ये लोग मानने वाले नहीं हैं। और उन लोगों को भी लगता था कि अब क्रांति बस आई कि आई, लेकिन वो सब भी टूट गया, बिखर गया और उसी हताशा वाली स्थिति में करीब–करीब एक बिखराव था कोई आंदोलन था नहीं। उसमें तब हम लोग जवान हुए और हमें लगा कि अब हमें काम करना है और उस समय करीब–करीब कोई आंदोलन नहीं था जिसमें हम जुड़ जाएं। तो 1988 में हमारे पिताजी, निर्मला देशपांडे वगैरह एक बार बस्तर गए और मैं तभी–तभी कॉलेज से निकला था। तो उन लोगों ने कहा कि तुम भी चलो और हम भी चलें तो मैं दिल्ली चला गया वहां जो हालत देखो और उससे पहले थे वहां एक बात मैंने तय कर लिया था कि सरकारी नौकरी नहीं करेंगे। और काम तो गांव में ही करेंगे लेकिन कहां करेंगे ये तय नहीं हो पा रहा था। मैं मुजफ्फरनगर का रहने वाला हूं। वो आर्थिक रूप से काफी ठीक–ठाक है पर वहां करने को कोई मन नहीं था। बस्तर जब गए तो वहां आदिवासियों को देखा और पाया कि उस समय वहां आदिवासी इलाके में भ्रष्टाचार बहुत था। दूसरा उस वक्त हमारे दिमाग में विकास की बहुत ही कनफ्यूजड सी परिकलप्ना थी कि इन लोगों को विकसित होना चाहिए और हमें लगता था कि सरकारी योजना से ये लोग विकसित हो पाएंगे। और मैं वहां 1988 के करीब गया और उनके साथ करीब 15 दिन रहा। तो जब हम उनसे बात करते थे तो वो कहा करते थे कि सरकारी योजना में तो इतना भ्रष्टाचार है। बैंक लोन देता है तो आधा पैसा तो मैनेजर खा जाता है। सारी योजनाओं में बहुत भ्रष्टाचार है। तब दिल में ये था कि अच्छा ठीक है हम गांव में जाएंगे और भ्रष्टाचार खत्म करेंगे जब भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा तो इन लोगों का विकास हो जाएगा। तब सोशल वर्क का दायरा हमारा यही था कि सरकारी योजनाओं से इनका विकास हो जाएगा यदि सरकारी योजना ठीक से लागू हो जाएं। तो भ्रष्टाचार खत्म करना यही समाज सेवक का काम है तो यही सोच लेकर हमने उन लोगों से वादा किया कि हम आएंगे तो दो–तीन साल यहीं दिल्ली में उत्तम नगर में गांधी स्मारक निधि का एक सेंटर है उसमें मैंने काम किया। और 89 में

मैंने यहां से छोड़ दिया और बस्तर जाने के लिए निकला। उस वक्त हमारे बहन और बहनोई गुजारत में काम करते थे। बहनोई हमारे ट्राइबल थे और वो संसद सदस्य भी थे और वो आदिवासी इलाकों में काम करते थे। उन्होंने मुझसे कहा बस्तर जा रहे हो पर गांव के बारे में तो तुम्हें कुछ पता नहीं तुम तो हमेशा शहर में ही रहे हो और शहर में पढ़े हो पहले तुम कोई ट्रेनिंग कर लो। बंगाल में रामकृष्ण मिशन में साढ़े तीन महीने की रूरल डेवलपमेंट पर ट्रेनिंग थी मैं उस ट्रेनिंग में चला गया लेकिन उसी दौरान हमारे जीजाजी की हत्या हो गई और मेरी बहन ने मुझसे कहा कि कुछ समय के लिए मैं उनकी मदद के लिए उनके पास चला जाऊं मैं वहां चला गया और दो साल तक गुजरात में रहा। छोटा उदयपुर का जो आदिवासी इलाका है वहां पर उनकी संस्था काम करती है। फिर 1992 में मैंने बहन से कहा कि मैं तो बस्तर जाने के लिए निकला इसलिए अब मैं बस्तर जाता हूं और जनवरी 1992 में मैं बस्तर के लिए निकल गया। अब वहां जाकर मैंने घूमना शुरू किया कि कहां पर अपना डेरा जमाया जाए। जहां पहले गए थे वहां भी गए। एक गांव में रात को रुके और वहां बात हुई तो गांव वालों ने कहा कि आप यहां पर रुक जाइए और यहीं पर आप अपना आश्रम बनाइए और हम आपको जमीन भी दे देंगे। हमने कहा कि ठीक है। हमारे बहन और बहनोई पहले से बस्तर में काम कर रहे हैं तो वहां एक संस्था है माता रुक्मणी देवी संस्था, माता रुक्मणी विनोबा जी की मां का नाम है। और विनोबा जी के मां के नाम पर वहां एक सामाजिक संस्था है। पदमश्री धर्मपाल सेनी 1970 में वो संस्था शुरू की थी। हमारे बहन बहनोई उस संस्था के साथ बच्चियों के शिक्षा के लिए काम करते हैं वो रेजिडेनशल आश्रम चलाते हैं तो उनके पढ़ाए हुए कुछ छात्र जो उस एरिया में थे तो उन लोगों ने मदद की। उन्होंने कहा आप इस इलाके में काम करें, और उन्होंने ग्राम सभा में एक प्रस्ताव किया कि ये संस्था हमारे गांव में काम करेगी। और इतनी जमीन हम इस संस्था को देते हैं और जब तक ये संस्था जब तक यहां काम करेगी तब तक ये जमीन इनकी रहेंगी और जब ये काम बंद कर देगी तब यह जमीन वापिस ग्राम सभा में चली जाएगी। इस तरह हमने वहां रहना शुरू किया। मेरी पत्नी जब मैं यहां उत्तम नगर में हस्तसाल में गांधी निधि सेंटर में काम करती थीं जैसे मैंने पहले

बताया जनवरी में मैं बस्तर गया और अगस्त में मैं यहां आया तो हम लोग फिर से मिले। मैंने उनसे कहा कि मैं वहां पर काम कर रहा हूं चलिए आप भी एक बार वहां देख आइए। वो वहां मेरे साथ तब घूमने गई और जब वापिस आई तो मैंने उनसे कहा कि हम दोनों वहां पर महिलाओं और बच्चों के बीच काम कर सकते हैं। मैंने अपने स्वार्थ से ये कहा और उन्होंने स्वीकार कर लिया। इस बात से हमारे माता–पिता भी बहुत खुश हुए क्योंकि पहले मैं भी शादी नहीं कर रहा था और वो भी नहीं कर रही थीं फिर हम दोनों के विचार मिले और हम दोनों ने शादी कर ली। तो हमारी नवम्बर में मैरिज हुई और एक महीने बाद दिसम्बर में मैं और मेरी पत्नी फिर से वहां पहुंच गए उसके बाद तब तक वहां गांव के लड़के और गांव के जो लोग थे वो भी पहुंच गए। असल में जब मैं वहां रहता था और मैंने वहां काम करने की सोची तो मैंने सोचा कि सर्वोदय को लागू कहां से करें वो शुरू कहां से होता है कुछ पता ही नहीं था। शहर से कुछ टॉफियां ले जाता था बच्चों के लिए। शहर से वो गांव 12 किलोमीटर दूर था, वहां दंतेवाड़ा में। उस समय तक दंतेवाड़ा जिला नहीं बना था। दंतेवाडा एक ग्राम पंचायत थी और जिले का नाम था 'बस्तर'। और बस्तर जिला केरल राज्य से भी बड़ा था। और डिस्ट्रिक हेडक्वाटर उस गांव से सवा सौ किलोमीटर दूर जगदलपुर था और प्रदेश का मुख्यालय था भोपाल। जो कि वहां से 11,00 किलोमीटर दूर था रायपुर 700 किलोमीटर दूर था। अब मैं दंतेवाड़ा आता था पैदल 12 किलोमीटर चलकर और वहां से दाल–वाल–चावल आदि समान लेकर आश्रम कंवलकर पहुंच जाता था। और बच्चों को टॉफियां देता था बच्चे एकत्र हो जाते थे, कौतूहल हो जाता था कि ये कौन आदमी आ गया हमारे गांव में। जब बच्चे नहाने के लिए हैंड पंप पर चले जाते थे तो मैं भी चला जाता था और मैं भी नहाता था और बच्चों को भी नहलाता था। तो ये देखकर गांव के लोग बहुत ही आश्चर्यचकित होते थे खासकर उनकी माऐं बड़ा हंसती थीं। सोचती थीं कि ये क्या अजीब सा आदमी है जो हमारे बच्चों को नहलाता भी है। पर खैर जो भी। तो उन्हें नहलाने के बाद मैं कहता था कि चलो अब पढ़ेंगे, पढ़ते–लिखते तो थे नहीं वो तो उनको यूं ही हाथ से पढ़ाने लगा क्योंकि कोई स्लेट, न कागज़, न किताब, न कोई चार्ट, न ब्लैकबोर्ड था बस गानों और

गिनती से पढ़ाने लगा। फिर बाद में गांव के नौजवानों के साथ बातचीत शुरू हुई। फिर हम लोग बॉलहीबॉल ले आते थे और उनके साथ खेलते थे। तब तक मैं गांव में एक ऐसे मकान में रहता था जहां दरवाजे आदि कुछ नहीं थे तो मैं वहीं पर रहता था। तो फिर उन्होंने हमसे कहा कि यदि आपको यहीं पर रहना है तो आपके लिए एक झोपड़ी बना देते हैं तो हमने कहा कि ठीक है बना दीजिए उसके बाद वे हमें अपने साथ जंगल ले गए और रास्ते में जो पहाड़ आए उसपर फटाफट चढ़ गए और ये हमारी बस की तो थी ही नहीं उनका मुकाबला करते। लेकिन हमने कोशिश ज़रूर की। फिर उन्होंने पहाड़ के पेड़ों से बड़े–बड़े झाड़ तोड़े एक मुझे भी दे दिया लेकर चला तो लेकिन मुझसे उसे उठाकर चला ही ना जाए। यूं लग रहा था कि अब गिरा कि तब गिरा। खैर मैंने उसे छोड़ दिया और सोचा खुद ही उतर जाऊं तो बहुत है और जबकि वो तो बड़े–बड़े गट्ठे लेकर जल्दी–जल्दी उतर जाते थे। और मैं जो उन लोगों को सिखाने गया था मुझे लगा कि मैं तो इन लोगों से कई मामलों में बहुत ही कमजोर हूं। ये लोग जो कर सकते हैं मैं तो वो भी नहीं कर पाता हूं। वो सारा घमंड तो खत्म हो गया कि मैं उनसे श्रेष्ठ हूं। उन्होंने खाली झोपड़ी बना दी जिसमें खाली छत थी दीवारें नहीं थी मेरी शादी के एक महीने बाद मेरी पत्नी भी वहीं पर मेरे साथ रहने आ गई। उन लोगों को देखकर सोचा कि यदि आप इन लोगों के लिए काम करने आये हैं तो क्या काम किया जाये। तो सबसे पहले ये बात दिमाग में आई कि उनकी जो तत्काल तकलीफ है सबसे पहले उसे दूर किया जाये और उनकी तकलीफ थी कि ये बीमार बहुत ज्यादा रहते थे। मलेरिया बहुत होता था और ज्यादा दस्त की शिकायत भी बहुत ज्यादा थी। तालाब का पानी भी जाता था। हम वहां के डाक्टरों के पास गए कि गांव में हेल्थ कैंप लगाइए और उन्हें बताया कि हमने फलां गांव में आश्रम लगाया है। वहां कई लोग बीमार हैं और आपका स्वास्थ्य विभाग काम नहीं करता है। उन्होंने अपने विभाग में लोगों को डांट लगाई और हमसे कहा कि ये आपके गांव में आ जाएंगे लेकिन एक–आध बार इनके आने से आपकी समस्या हल नहीं होगी इसलिए आप ऐसा करो कि लोगों को खुद ही दवाई दे दो। इस तरह उन्होंने हमें स्लाइड बनाना सिखाया और बताया कि आप लोग मलेरिया स्लाइड बनाकर हम लोगों

को दे दिया करो। हम आपको क्लोरोक्वीन भी दे देते हैं और जिनका पोजिटिव आएगा उनके रेडिकल ट्रीटमेंट के लिए 'प्राइमाक्वीन' भी आप लोगों को दे देते हैं, उसकी ये–ये डोज होती है। खुजली की ये दवाई ले जाओ, दस्त की ये दवाई ले जाओ आदि। तो उन्होंने मुझे कई दवाइयां दी जिन्हें लेकर मैं घर आ गया और पत्नी से कहा कि ये दवाईयां तो मिल गई हैं लेकिन इन्हें दें। किस तरह से मतलब रखें किस तरह? मैंने देखा कि हमारे पास कुछ भी नहीं है तो मेरी पत्नी का जो वेनिटी बॉक्स था उसमें हमने सभी सामान भर दिया। मैंने कहा कि यहां तुम्हारा मेकअॅप कौन देखेगा तो तुम्हारे वेनिटी बॉक्स को कुछ काम में लाया जाए। और इस तरह मेरा सोशल वर्क शुरू। पत्नी मुझसे नाराज कि मैं तो उसे खाना तक नहीं बनाने देता था अपने इस काम के कारण। और खाना बनाना भी कठिन था पहले लकड़ियां एकत्रित करो, फिर उसे चूल्हे में जलाओ और फिर बड़ी देर तक उसमें फूंक मारती रहती थी लेकिन लकड़ी गीली होने की वजह से उसमें आग ही नहीं लगती थी। और ऊपर से मैं उसे डांटता रहता था कि तुमसे तो चूल्हा ही नहीं जल रहा है। इतनी देर लगाती है सारा समय खाने में ही व्यतीत कर देती हो तो हम लोग सोशल वर्क कब करेंगे। और वो रोने लगती थी और वहीं मेरे सिर पर ये भूत सवार था मैं बहुत बड़ा सोशल वर्कर हूं। खैर इस तरह से हमने काम शुरू किया और हम दोनों जाते थे और देखते थे कि जहां–जहां जो बीमार है उसे दवाई देते थे। कई बार देखते थे कि ये दवाई दी और जैसे कि कोई बुखार में तप रहा है और हम उसे दवाई दे आये फिर अगले दिन फिर गए तो पता चला कि वो तो अभी भी बुखार में तप रहा है तो जब हम पूछते थे कि दवाई खाई तो वो कुछ नहीं कहते और मुंह पलट लेते थे, घर वालों से पूछा तो पता चला कि वो दवाई तो पुड़िया बनाकर छत में ढूंस दी गई है। आप दवाई दे दीजिए, पूरा डोज समझा दीजिए लेकिन वो उनके कुछ काम नहीं आता था क्योंकि वो तो दवाई को छत्त पर ढूंस देते थे। फिर हमने ये सोचा कि सबसे पहले हमें इन्हें अपने सामने दवाई खिलानी तो हमारे सामने ये समस्या कि मलेरिया की दवाई खाली पेट नहीं दे सकते। इसलिए हम कहते कि इनके लिए कुछ खाने के लिए लाओ। जवाब मिलता कि अभी तो खाना नहीं बना तो हम कहते नहीं बना तो खाना बनाओ। चावल बनाओ। अब

जब तक चावल बन रहे हैं हम भी बैठे हैं वहां पर पहले मरीज को चावल खिलाया। फिर दवाई खिलाई। तो ऐसे धीरे–धीरे काम करते रहे। वक्त बीतता गया लेकिन शुरू के पांच साल तक हम जो समाज परिवर्तन और जो एकदम से गांव की जिंदगी बदल देंगे, गांव बदल जाएगा और हर आदमी संगठित हो जाएगा और अपने गांव को एक आदर्श गांव बना देंगे वो सब नहीं हुआ। पांच साल बाद एक निराशा का दौर आया हम लोग घूम कर आ जाते थे खाना–वाना खा लेते थे उसके बाद सोचते थे कि अब क्या करें। एक बार तो मन में आया कि क्या वापिस जाना पड़ेगा क्योंकि कुछ भी नहीं हुआ, क्या जिंदगी भर दवाई ही बांटते रहेंगे। कुछ लोग खा लेते हैं कुछ लोग नहीं खाते हैं कुछ लोग ठीक हो जाते हैं कुछ लोग नहीं होते हैं। हम तो बहुत कुछ बदलने के मकसद से आये थे लेकिन कुछ भी नहीं बदल रहा है हम जो ग्राम स्वराज और जो एकदम देश को बदल देंगे ये सोचकर घर छोड़ा था लेकिन यहां देखा कि यहां तो कुछ भी नहीं बदल रहा। हमारी पत्नी पहले गांधी सनिधि में कुसुम शाह वगैरह के साथ काम करती थी उनकी जो दादी की बहन थी डॉ0 सुशीला नैयर उनकी कजन थी वो गांधीजी की फैमिली डॉक्टर थीं। वो भी गांधी जी और विनोबा जी को बड़ा पढ़ती थी और उसी तरह से काम करती थी उसमें उन्होंने पढ़ा कि यदि समाज तुम्हारी सेवा लेने को तैयार न हो तो कार्यकर्ता को दो काम करने चाहिए। एक तो सफाई और दूसरा चरखा चलाओ। तो हमने कहा कि ठीक है तो खैर किसी तरह से दिल को टिकाए रखा कि उखड़ना नहीं है। और इस दौरान कोई फंडिंग नहीं कुछ नहीं कभी वो घर जाती थी उसके पिता कुछ दे देते थे और कभी मैं घर जाता था मेरे पिता कुछ दे देते थे और जहां वो काम करती थी कुसुम शाह के साथ तो वो थोड़ा पैसा दे देती थी। फिर यहां पर एक संस्था है आदिम जाति सेवक संघ तो उन्होंने कहा कि आप हमारा पालना घर चलाइए हम आपकी पत्नी को 500 रुपये दे देंगे तो हमने कहा कि बच्चों को तो हम इकट्ठा करते ही हैं। लेकिन बच्चों को न कुछ खाने को दे पाते हैं न कुछ पढ़ाने का समान है और न ही कुछ और तो क्रेश सेंटर खोलने से ये हुआ कि हम लोग बच्चों के लिए चार्ट खरीद पाए, स्लेट खरीद पाए। दिन में खिचड़ी बनाकर देने लगे तो उससे हमारे मन में भी एक संतुष्टि हुई कि हम बच्चों को बुलाते

हैं तो उससे एक प्रैक्टिकल सेवा हो रही है। लेकिन ऐसा नहीं होता था कि आप एकदम से सफल हो गए। क्योंकि कई बार बच्चे ही नहीं आते थे जैसे कभी चार बच्चे आ गए। और कभी पता चला कि खेतों में मां–बाप महुवा बीन रहे हैं और बच्चे पेड़ों के नीचे खेल रहे हैं। तो हम उन्हें वहां से घेरकर लाते थे नहीं आते थे तो एक को इधर दबाते थे और दूसरे को उधर तो इस तरह से उन्हें घेरते थे। उनको नहलाना, उनकी साफ–सफाई आदि करना। पालना घर में बहुत छोटे बच्चे होते थे उनके माता–पिता काम पर चले जाते थे तो बच्चे हमारे पास रहते थे तो वो इतने छोटे होते थे कि उनका सभी काम करना पड़ता था। कई तो इतने छोटे होते थे कि मांए आकर उन्हें बीच–बीच में दूध भी पिला जाया करती थीं। कई बच्चे कपड़ों में ही सब कुछ कर लेते थे। तब उनकी सफाई भी करनी पड़ती थी। लेकिन उसमें हमें बड़ा आनन्द आता था कि हम व्यवहारिक सेवा कर रहे हैं। फिर जब हम दिल्ली आते थे अपने रिश्तेदारों आदि से बच्चों के लिए कपड़े भी ले जाते थे फिर हमने ये जानने समझने की कोशिश की कि उनकी इस स्थिति का कारण क्या है इनकी बेआवाजी का कारण क्या है और फिर हमने इसका समाधान जानने की कोशिश की। इसी दौरान हमने ये भी देखा कि ये आदिवासी एक ही फसल करते हैं। बरसात हुई तो उसमें हल चलाया और फिर उसमें धान बो दिया। जब धान पक जाए तो जाकर काट दिया तो हमने सोचा कि इनके खेतों में पैदावार किस तरह से बढ़ाई जा सकती है। वो जो उनका धान होता है वो कुछ का दो महीने और कुछ का चार महीने और जो बहुत अच्छा किसान है उसका छह महीने चल पाता है बाकी फिर या तो मजदूरी करे या फिर महुवा वगैरह बेचे उसी से उसका गुजारा चलता था। साल भर का चावल भी आदिवासी अपना नहीं उगा सकते थे तो हमने सोचा कि इस हालत को कैसे बदलें। इसी दौरान साइंस एंड टैक्नोलॉजी वाले लोग हमारे पास आए। और उन्होंने कहा कि आप तो बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं और हम आपकी मदद करना चाहते हैं। हमने कहा कि इन लोगों की खेती–बाड़ी की स्थिति को सुधारना चाहते हैं। हम ये तो नहीं चाहते कि ये अंग्रेजी खाद डालें लेकिन ये आदिवासी गोबर की खाद भी बनाना नहीं जानते। बस्तर में तरीका ये है कि गायों को छह महीने तो बांधते ही नहीं हैं,

सेमी–वाइल्ड हैं वो। और जंगल में घूमने की वजह से वो ऊंची–ऊंची पहाड़ी भी बड़े ही आराम से कूद जाते हैं। हमारी यूपी, हरियाणा, पंजाब की गायें वो सब नहीं कर सकती जो वहां की कर सकती हैं। वहां के लोगों को छह महीने तक तो पता ही नहीं होता कि उनकी गायें कहां पर हैं। वहां पर एक सालाना रिवाज होता है साल में एक महीना वहां के किसी भी आदमी से पूछो कि कहां जा रहे हैं तो जवाब मिलेगा कि अपनी गाय ढूंडने जा रहे हैं और गाय उनकी मिलती है 20 किलोमीटर, 30 किलोमीटर जाकर कहीं। फिर वो अपनी गायों को एक्टठा कर लेते हैं और रोजाना उन्हें शाम से सुबह तक बांधे रखते हैं। और फिर सुबह हल चलाना शुरू करते हैं थोड़ा–थोड़ा और फिर बरसात आते ही वो बीजों को बो देते हैं और हां! वहां जानवरों के लिए घर नहीं बनाया जाता पूरी बरसात जानवर बारिश में भीगते ढीढी करके बंधे रहते हैं और फिर वहीं पर उनका गोबर इक्ठा होता है उसको वहीं पर एकत्र कर देते हैं गोबर को पूरी गर्मी सूखने देता है जब वो पूरी गर्मी सूख जाता है तब आखिर में वो बरसात से पहले उस गोबर को खेतों में डाल दिया जाता है और ये कहा जाता है कि ये खाद है। और उस गोबर में बहुत ज्यादा घास के बीज होते हैं फिर इस सूखे गोबर को डालने से खरपतवार, दीमक बहुत हो जाती है तो हमें इसमें लगा कि इस बात में थोड़ा सा इंटरवेंशन किया जाए कि उसी गोबर से खाद किस तरह से बनाई जाई जिससे इनकी पैदावार बढ़ जाए। उस समय तक वहां नाडेप की पद्धति शुरू हो गई थी हम लोागों ने नाडेप के प्रयोग शुरू कर दिये थे। अपने आश्रम में भी हमने नाडेप बनाया था। नाडेप की खाद को हम अपने आश्रम के किचन गार्डन में इस्तेमाल करने लगे थे। हम ये नाडेप पद्धति आदिवासियों के बीच फैलाना चाहते हैं और उन्हें ये सिखाना चाहते हैं कि यदि ये गोबर को ऐसे ही न फेंके बल्कि नाडेप पद्धति से खाद बनायें तो उनकी पैदावार करीब–करीब डेढ़ गुना से दो गुना हो सकती है और हमने कहा कि अभी ये एक ही फसल लेते हैं यदि ये एक फसल से दो फसल लें तो इनकी पैदावार बहुत बढ़ जायेगी ऐसी चीज होनी चाहिए जिसमें सिंचाई की जरूरत न हो क्योंकि वो इलाका पठारी पहाड़ी इलाका है ज्यादातर ढ़ालदार जमीन है प्लेन जमीन नहीं है। सिंचाई हो नहीं सकती और वहां आपको तो मालूम ही है कि अंडरग्राउंड वाटर के लिए जमीन के

नीचे जाने में सालों लगते हैं। और पठारी इलाकों में तो और भी समस्या है। बस्तर के इलाके में नीचे पूरी चट्टानें हैं और वहां बिना ड्रिल मशीन के आप हेंड पंप नहीं लगा सकते हैं। चट्टान में कहीं दरार हो तो उसी के थ्रू पानी वहां रिसता है। उस पानी को अगर आप पंप करके निकाल दें तो पीने का पानी भी खत्म हो जाता है। हैंड पंप सूख जाते हैं तो अंडर ग्राउंड वाटर को निकाल कर सिंचाई करने वाली बात तो बेकार ही है ऐसा करना मूर्खता होगी। अलबत्ता बिना सिंचाई के क्या हो सकता है वो बताइए तो कृषि विभाग वालों के साथ बात करके उन्होंने हमें ये बताया कि जब ये धान काटते हैं उससे पन्द्रह दिन पहले ये खेतों में चना फेंक दें तो अच्छा होगा क्योंकि धान काटने से दस एक दिन पहले वो पानी खोल देते हैं, पानी निकल जाने देते हैं उसके बाद धान काटते हैं तो उसी नमी में चना हो जाता है।

डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टैक्नोलॉजी के साथ हमारी संस्था का पहला फंडेड प्रोजेक्ट था डेढ़ लाख रुपये का कि नाडेप की कुछ टंकियां बनाई जाएं ईंट की और इनको चने का बीज बांटा जाए और चने की खेती की जाए और हमने वो काम किया तब तक किया जब तक मैं दंतेवाड़ा से बाहर माओवादी होने के आरोप में निकला था। तब तक तो हम नाडेप पर काम कर ही रहे थे वो काफी फैल गया था। उसके बाद केंचुआ खाद का भी हमने काम किया वो तकनीक भी गांव–गांव में हमारे कार्यकर्ता बता रहे थे और उसके बाद फिर पहला प्रोजेक्ट ये था फंडेड प्रोजेक्ट। उसके बाद 1996 में हमने एफसीआरए के लिए हमने एप्लाई किया जो पहले तो रिजेक्ट हो गया उसमें आईबी वगैरह जांच की तो कहा कि ये तो फैमिली ऑगेनाइजेशन है क्योंकि मैं और पत्नी दोनों थे संस्था में। मैं दिल्ली आया दिल्ली में आकर मैंने एफसीआरए वालों से अप्वाइंटमेंट मांगा और उन्होंने मेरा इंटरव्यूह लेना शुरू किया। जब उन्हें पता चला कि मेरा बेकग्राउंड थोड़ा सा सर्वोदयी वाला है, तो उन्होंने उसी विचारधारा के खिलाफ बोलना शुरू किया और मैंने उनका जवाब देना शुरू किया, थोड़ी गर्मा–गर्मी भी हुई तो उन्होंने कहा कि मैं भी गांधीवादी ही हूं मैं आपकी परीक्षा ले रहा था क्योंकि ज्यादातर लोग पैसे के लिए संस्था बनाते हैं लेकिन आपसे बात करके लगा कि आपके भीतर

एक आग है इसलिए हम आपको एफसीआरए देते हैं और उन्होंने यह भी लिखकर दिया कि ये मेरा फैमिली आर्गेनाइजेशन नहीं है क्योंकि वो मेरी पत्नी बाद में बनी संस्था की मेंबर तो वो पहले से ही थी। तो इस तरह से एफसीआए मिला। उसके बाद फिर कुछ ओर फंडिंग एजेंसीस आईं जिसमें कासा है, सीआरएसएस है। महिलाओं के समूह गठन, सीआएसएस के साथ हम लोगों ने काम शुरू किया कि उन इलाकों में जितने भी बच्चे हैं वो स्कूल कैसे जाते हैं। उस संबंध में हमारे कुछ अलग अनुभव रहे वहां जब खेती शुरू होती है तो मां घर का काम करती है, बाप खेती का काम करता है और बच्चे गाय चराते हैं। लेकिन अब सरकारी स्कूल तो उसी समय चलते हैं तो जब खेती शुरू होती है तो ऐसे में बच्चों को स्कूल किस तरह से ले जाए ? इस बारे में हमने बहुत से प्रयोग किये। हमारी बात ये थी कि हमने जो भी कार्यक्रम चलाए उसमें उसी गांव के लड़के–लड़कियों को जोड़ा। उनसे पहले पूछा कि इस बारे में तुम लोगों का क्या ख्याल है उनकी क्या सोच है वो किस तरह से देखते हैं इसे इसलिए उस विचार–विमर्श के बाद हमने कोई बीच का रास्ता निकालने की कोशिश की। जो आधुनिक सोच है और जो आदिवासी सोच हो उसके बीच का कोई रास्ता ताकि आदिवासी संस्कृति पर भी कोई चोट न हो उन्हें ऐसा न लगे कि हमें उनका तरीका या सोच गलत लगती है आधुनिक सोच ही सही है आधुनिक ज्ञान तुम अपनाओ आदि इस तरह की बातें न हों। यही सोचकर हमने कोशिश शुरू कि कि कोई बीच का रास्ता निकाला जाए। फिर हमने सोचा कि हर बच्चा स्कूल कैसे जाए क्योंकि बच्चे तो गाय चराते हैं। अब हमने शुरू में तो वही जबरदस्ती वाला रवैया अपनाया कि कोई बच्चा गाय नहीं चरायेगा। हर बच्चा स्कूल जायेगा। और बच्चे जब गाय चरा रहे होते थे तब हमारे कार्यकर्ता वहां जाते थे और बच्चों को जबरन उठाकर स्कूल ले आते थे और उनकी गायें–भैंसे वहां लावारिस घूमती रहती थी और उनके माता–पिता हमें गाली देने लगे कि क्या हमारी गायों को तुम चराओगे क्या। तुम हमारे बच्चों को हमसे बिना पूछे स्कूल ले जाते हो तो क्या हमारी गायों को तुम चराओगे क्या। तो इस बात पर हमारे कार्यकर्ताओं के साथ बहुत ब्रेन स्ट्रॉमिंग हुई और पता किया गया कि दूसरे इलाकों में क्या होता है पता चला कि दूसरे इलाकों में एक आदमी हर घर की गायें

एकत्र करके ले जाता है और शाम को हर घर की गाय वापिस छोड़ जाता है। मेहनताने के तौर पर उसको पूरा गांव थोड़ा–थोड़ा अनाज दे देता है और शाम को थोड़ा अनाज आदि दे देता है। तो उस आदमी को न तो खाना बनाना पड़ता है और न ही उसे साल भर के अनाज की चिंता करनी होती है। हमने गांव वालों को ये उदाहरण बताया और कहा कि आप लोग भी ऐसा ही कीजिए। हमारे उत्तर प्रदेश वगैरह में तो ऐसा होता है कि एक आदमी दो बैल गाय और एक गाय पालता है लेकिन वहां तो एक आदिवासी के पास 40 गाय और 50 बैल तक होते हैं और इस तरह पूरे गांव के तो हजारों जानवर हैं तो ऐसे में एक आदमी ऐसा कैसे कर सकता है। तो वो भी फेल हो गया तो हमने सोचा कि कोई और तरीका ढूंढ़ा जाए। हमने कहा कि दो घर में पति, पत्नी बच्चे आदि सब लोग मिलाकर 10–12 लोग हो जाएंगे और फिर वो लोग हो जाएंगे। तो पूरा एक पारा (वहां पर लोग बंटे हुए होते हैं पारों में जैसे यहां मौजा होता है टोला होता है वैसे ही वहां पारा होता है। एक पारा, दूसरे पारे से चार किलोमीटर, पांच किलोमीटर दूर होता है। तो एक पारे में 5 से 50 परिवार तक हो सकते हैं। हमने कहा कि एक पारे की गाय, बैल एक साथ चरेंगी। अब हम गांव के बदले पारे को एक इकाई मानेंगे। और उसपर दो फैमिली एक दिन चराएंगें, दूसरी दो फैमिली एक दिन चराएंगे और तीसरी दो फैमिली एक दिन। और जिस दिन वो जानवरों को चराएंगे उस दिन उनका काम बाकी लोग कर देंगे इस तरह से कोमयुनिटी के साथ बैठकर हमारे कार्यकर्ताओं ने ये अचीव कर लिया कि उतने गांव में एक भी बच्चा स्कूल के बाहर नहीं था अर्थात 100 प्रतिशत उपस्थिति थी। देखा जाए तो एनरोलमेंट तो सरकार 100 प्रतिशत कर ही लेती है। जैसे ही बच्चा पैदा होता है उसका नाम आंगनवाड़ी में लिख दिया जाता है। और उसका नाम आंगनवाड़ी से पांच साल के बाद स्कूल का गुरूजी ले जाता है और वो ऑटोमेटिकली स्कूल के रजिस्टर में चला जाता है लेकिन वो बच्चा न कभी जिंदगी में आंगनबाड़ी जाता है और न ही स्कूल जाता है। लेकिन हम लोगों ने प्रयत्न करके उस बच्चे का आंगनबाड़ी भी जाना इंश्योर किया और स्कूल जाना भी इंशयोर किया। इस दौरान हमने देखा कि जब आप इन चीजों पर काम करते हैं तो बहुत सी समस्याएं निकलकर आती हैं। जैसे जब

स्कूल में बच्चे शुरू हुए तो वो दिन भर सिर्फ खेलते रहते थे क्योंकि वहां दिनभर गुरुजी आते ही नहीं हैं। और बच्चों के माता–पिता हमारे पाास शिकायत लेकर आने लगे और कहने लगे कि तुम लोग हमारे बच्चों को यहां से ले जाते हो और स्कूल में तो टीचर आते ही नहीं हैं बच्चे दिनभर खेलते रहते हैं इनके कपड़े फटे होते हैं, इन्हें चोट लगी होती है। और ये आपस में लड़ते रहते हैं। इससे हमें समझ में आया कि हमारी डयूटी ये भी है कि हम बच्चों को स्कूल तो ले जाएं ही साथ में उन्हें पढ़ाएं भी। और कलेक्टर के पास गए कि आपके ये टीचर लोग गांव में नहीं रहते हैं तो उसने कार्यवाही करने का आश्वासन दिया। हमने देखा कि कलैक्टर के नीचे कई लोग हैं एजूकेशन ऑफिसर है, रेजिडेशन कमिशनर है ट्राईबल डेपलपमेंट का, फिर बीडीओ है फिर बीओ है फिर उसके नीचे संकुल प्रभारी है, फिर टीचर है। हर जगह जाकर टक्कर मारो तो उसी में महीने–दो महीने गुजर जाते हैं। कोई ठेकेदारी कर रहा है, कोई पान की दुकान खोलकर बैठा है शहर में। उनमें से कईयों को तो ये ही नहीं पता कि उनकी पोस्टेड हैं तो उनको पकड़कर लाना कठिन काम है अब उनमें से किसी का भाई भाजपा का नेता है, किसी का कांग्रेस का तो अब उन सबसे दुश्मनी भी मोल लेने बड़ी और वो कार्यकर्ताओं को धमकाते थे कि तुम बहुत अपने–आप को नेता बनते हो। ये सारे संघर्षों के बीच में चीजों को धीरे–धीरे ठीक करना शुरू किया। इसी के दौरान डॉ. सुदर रमन जो बीजीएस, भारत ज्ञान–विज्ञान वाले इन लोगों ने कॉम्युनिटी हेल्थ पर प्रयोग शुरू किया। ये था साल 2000 और इसमें हेल्थ को एक व्यापक दृष्टि से देखा जाने लगा। (बीच में विजय प्रताप बोले के ये ग्रुप – जेपी मिश्रा, विराज, पटनायक, हर्ष मंदर का था शायद) और बाद में उसे मितानिन कार्यक्रम कहा गया छत्तीसगढ़ में, मितानिन का मतलब होता है सहेली। और उसी को बाद में आशा के रूप में भारत सरकार ने अडाप्ट किया। विनायक सेन उस कमेटी में शुरू में सलाहकार भी थे और वो इम्प्लीमेंटेशन भी कर रहे थे, रूपांतर एलीना सेन की जो संस्था है। और दंतेवाड़ा में हम लोग शामिल थे और स्वास्थ्य को फिर एक व्यापक रूप में देखा जाने लगा। कि स्वास्थ्य का मतलब बीमार होना और दवाई खा लेना नहीं है स्वास्थ्य का मतलब समाज में महिलाओं की क्या स्थिति है। उसी सेहत कैसी है उसका हक

कितना है एक महिला की जितनी प्रारियोरिटीज हैं उसे समाज और परिवार कितना महत्व देता है। भोजन पर, बच्चे की शिक्षा पर, बच्चे के स्वास्थ्य पर पूरा परिवार कितना ध्यान देता है और फिर जो सरकार है, सिस्टम है, गांव की पंचायत है वो इन चीजों को कितनी प्रारियोरिटी देती हैं क्योंकि पंचायतों की ज्यादातर निमार्ण, जैसे कि स्कूल बनाना, सड़क बनाना, ठेकेदारी करना ही पहली प्रायरिटी होती है। आंगनवाडी कार्यकर्ता आ रही हैं या नहीं, बच्चे को पोषक आहार मिल रहा है या नहीं। स्कूल में मध्यान भोजन मिल रहा है या नहीं ये सब पंचायत की प्राथमिकताएं हैं ही नहीं। और ये सब तभी होगा जब महिला पंचायत में जाएंगी। महिला ग्राम सभा में इन मुद्दों को उठाएगीं और वो ये दबाव डालेगी कि पंचायतें इन चीजों को भी शुरू करे। तो ये सब तभी होगा जब गांव के समाज में महिला की स्थिति स्ट्रांग हो। तो हेल्थ को एक व्यापक प्ररिप्रेक्ष्य में देखना शुरू किया गया। और हम लोग उसमें जुड़े। तो हमारे जो साथी हैं कोपा कुंजाम हैं जो इस समय जेल में हैं। तो वो इन सारी चीजों में काफी तेज था तो उसने महिलाओं की ट्रेनिंग शुरू की, 'महिला इम्पॉवरमेंट'। उसने महिलाओं को ये समझाना शुरू किया कि ये जो तुम्हारा सरपंच है ये तुम्हारा नौकर है, ये मालिक नहीं है गांव का। इससे तुमने काम लेना है और तुमने इसका कॉलर पकड़ कर रहना है कि ये कर। ये जो रोज मोटर साइकिल उठाकर भाग जाता है ब्लॉक ऑफिस और इसे वहां जो कलैक्टर और बीडीओ बोलता है ये वही काम करता है। तुम जो बोलती हो वो न तो सुनता है और न ही करता है। तो इस चीज को लेकर लगातार पांच साल तक महिलाओं की ट्रेनिंग की। हर विषय पर जैसे स्वास्थ्य, पंचायत कैसे काम करती हैं, स्वास्थ्य के बारे में, सफाई के बारे में, टीबी क्या है, और आदिवासी समाज में अंधविश्वास आदि। जैसे उन्हें कई बीमारियों की समझ ही नहीं थी। जैसे कि कोई बच्चा जोर–जोर से सांस ले रहा है तो उसे समझा जाता था कि उसपर किसी भूत–प्रेत का साया पड़ गया है और उसे सिराह के पास ले गए और इधर पता चला सिराह झाड–फूंक कर रहा है और उधर बच्चा मरा जा रहा है। अगर मलेरिया सिर में चढ़ जाए और बेहोश हो जाए बच्चा तो कहते थे कि इसको तो भूत ने मार दिया। तो वो सारी चीजों की ट्रेनिग शुरू की। और फिर वहां सरकार ने कहा कि हमारा जो

सरकारी अमला है इसकी भी कुछ ट्रेनिंग करो, हमारे कार्यकर्ता गांव में नहीं जाते हैं और आपके कार्यकर्ता तो गांव–गांव जाते हैं। तो कुछ इनको भी सिखाइये तो फिर हमने सरकारी कार्यकर्ताओं की भी ट्रेनिंग शुरू की और हमारे सरकार के कार्यकर्ताओं और सरकार के साथ बड़े अच्छे संबंध हो गए। मैं बहुत सारी सरकारी कमेटी में था उसके बाद तो मुझे वहां के न्यायालय ने अपने उपभोक्ता फोरम का सदस्य बनाया उसके बाद फ्री लीगल ऐड अथॉरिटी है उसने अपना मेम्बर बनाया। तभी सलवा जडूम भी शुरू हुआ।

(विजय प्रताप ने सवाल किया कि माओवादी कब आये)

हिमांशु : माओवादियों के साथ हमारा संबंध समझना चाहते हो तो वो भी मैं बताता हूं। माओवादी भी वहीं थे और हम भी वहीं थे और हमारे बीच में काई टकराव भी नहीं था। माओवादी 1984 से वहां थे जनता और आदिवासी इनके खिलाफ नहीं थे कुछ जगहों पर कभी–कभी कोई कार्यकर्ता आता था और कहता था कि हमारे साथ जुड़ो। तब उन्हें माओवादी नहीं कहा जाता था तब उन्हें नक्सलवादी कहा जाता था। कुछ जगहों पर कभी–कभी कोई कार्यकर्ता आता था और कहता था कि साहब माओवादियों ने कहा कि हमारे साथ जुड़ो और हमने मना कर दिया और नक्सलवादियों ने कहा कि ठीक है अगर आप हमारे साथ नहीं जुड़ना चाहते हैं तो ठीक है। इसलिए जब कभी मेरे सामने किसी ने आरोप लगाया कि माओवादी जबरदस्ती लोगों को शामिल करते हैं तो मैंने उनके साथ अपना अनुभव बांटा कि जहां तक मुझे जानकारी मिलती है कि मेरे कार्यकर्ताओं ने जो कि वहीं के आदिवासी थे और उन्हीं गांवों के थे जिन गांव में शाम को नक्सलवादियों की मीटिंग होती थी और दिन भर में हमारे कार्यकर्ता काम करते थे। उन्होंने कभी हमारे कार्यकर्ता को जबरदस्ती अपने साथ शामिल नहीं किया। खैर एक–आध जगह ये आया कि वो जो लोकल समूह को संघम कहते हैं वो किसान संघ, महिला संघ इत्यादि बनाते हैं। किसान संघ आदि। किसान संघम के जो लोग होते हैं संगम कुछ लोग ज्यादा उत्साह में उन्हें लगता था क्रांति अभी हो जाएगी तो वो कहते

थे कोई सरकारी कार्यक्रम नहीं चलेगा तुम लोग सरकारी कार्यक्रम चला रहे हो नहीं चलेगा हमारे यहां तो हम लोग जो हैल्थ में काम कर रहे थे मैदानी कार्यक्रम। तो वो लोग कहते थे ये भी नहीं चलेगा एक आध दफा हमारे कार्यकर्ताओं ने कहा कि फलां गांव में वो लोग मीटिंग नहीं होने देते और कहते हैं यहां सिर्फ हमारी मीटिंग होगी तो हमने कहा चलते हैं देखते हैं कैसे मीटिंग नहीं होने देते। हम जाकर उनसे बात करते और पूछते आपकी क्रांति जब होगी तब होगी तब तक क्या आपके बच्चे बीमारी से मरते रहें आपकी महिलाएं तब तक कुपोषण से मरती रहेंगी हम तो यही सिखाते थे कि सब्जियां कैसे उगाई जाएं और सब्जियां कुपोषण को दूर करती हैं। दंतेवाड़ा में सब्जी उगाते ही नहीं हैं बरसात में थोड़ी बहुत तो हो गई पर हम लोग तो सिखाते थे कि स्वयं सहायता समूह बनाओ उसमें दो–दो रुपये इक्ट्ठा करो, बीज खरीदो नदी के किनारे जमीन को थोड़ा साफ करो वहां सब्जियां उगाओ और खाओ हम तो यही सिखाते हैं सब्जियां खाओ कुपोषण भगाओ। बच्चा बीमार हो तो डाक्टर के पास ले जाओ, बीमारी को पहचानना सीखो। और हमने दस तरह की दवाइयां दे रखी थीं कार्यकर्ताओं को कि निमोनिया हो तो रात को बच्चे को ये दे देना, दस्त हो तो ये दवाई दे देना, खुजली हो तो ये दवाई दे देना हमने पूछा कि बीमारी में दवाई न दी जाए ये कौन सी क्रांति है हमने कहा कि यदि लड़ना है तभी तो लड़ पाओगे जब थोड़ी ताकत होगी इतनी कमजोरी में लड़ेंगे कैसे? तो खैर वो चीजें साफ हो जाती हैं। जो ग्राम समुदाय होता था उसको वो चीजें साफ–साफ समझ आ जाती थीं।

बाद में जब हमारी लड़ाई माओवादी के साथ एक बार काफी तेज हो गई और उसके बाद उन्होंने रिट्रीट किया क्योंकि हम लोगों ने नैशनली एक प्रैशर क्रिएट किया। ऐसा हुआ था जब सल्वा जडूम ने गांव जलाकर आदिवासियों के काफी सारे गांव खाली करवा दिये थे ये हुआ था 2005 में। वो सारी महिलाएं जिनके साथ हम पंचायतों पर, स्वास्थ्य पर, बच्चों पर काम कर रहे थे उनके गांवों को भी जलाया गया था। उन गांवों की महिलाएं कैंप में आईं क्योंकि हम कैंप पर भी काम कर रहे थे ऐसी हमारी अकेली एजेंसी थी जबकि सरकार भी ऐसी एजेंसी थी जो सिर्फ एक तरफ काम कर

रही थी। हमारी संस्था एक ऐसी संस्था थी जो सल्वा जडूम कैम्प में भी काम करती थी और गांव में भी काम करती थी जिसकी दोस्ती कलैक्टर से भी थी और माओवादी नेता से भी और वो दोनों से बात कर सकती थी और दोनों से अपना काम करवा सकता थी लेकिन धीरे–धीरे ये सहनशीलता खत्म होती चली गई और दोनों तरफ से हमले तेज होते गए माओवादियों पर हमले तेज होते चले गए और सांय में हमारे प्रति दोनों संदेह दोनों का बढ़ता गया माओवादी भी मानते थे कि हम उनके साथ नहीं हैं मतलब सरकार के साथ हैं दोनों ने हमारी भूमिका को गलत तरीके से समझना शुरू किया। दोनों ने हम पर हमला शुरू किया माओवादियों के हमले को हमने रोक लिया और आखिर में माओवादियों को कहना पड़ा कि हम आपको कहीं भी काम करने से नहीं रोकेंगे क्योंकि हमें यह समझ आ गया कि आपका कोई पॉलिटिकल एजेंडा नहीं हैं आपका काम पॉलिटिकली मोटीवैटेड नहीं है बिल्कुल नॉन पॉलिटिकल काम है। इसके लिए आपसे कोई विरोध नहीं है और आप कर सकते हैं। मैंने कलैक्टर से कहा जैसे कि मैं कोई बात छुपाता नहीं हूं। मैंने कहा मैं माओवादी नेताओं से मिला हूं और उन्होंने ये कहा है कि हमारे कार्यकर्ताओं को सारे सरकारी कार्यक्रमों को चलाओ क्योंकि हम ये मानते हैं कि जनता भूखी नहीं मर सकती और हम ये भी मानते हैं कि जनता बहुत ज्यादा कष्टों में रही तो हमारा साथ छोड़ देगी। इसलिए हिमांशु जी सारा काम करने के लिए स्वतंत्र है तो हमारे कार्यकर्ता ने कहा कि क्या बिजली भी लगवा सकते हैं क्योंकि बिजली के खंबे तोड़ देते थे, सड़क खोद देते थे, बिजली लगवा सकते हैं? हमारे कार्यकर्ताओं ने पूछा, क्या बस भी चलवा सकते हैं तो उन्होंने कहा हां बस भी चलवा सकते हैं। तो ये जो कहा जाता है कि ये सड़कें उड़वा देते हैं हम लोगों ने वह रोक दिया था हमारे इलाके में बसों का चलना शुरू करवा दिया था और मैंने कलैक्टर से कहा कि आप जो एरिया डॉमिनेट करते हों सरकार का एरिया डॉमिनेट होता है तब बहुत सारी फोर्स जाती है और उन इलाकों में जाकर रॉकेट लॉचर से धाड़–धाड़ चलाना शुरू करते हैं और उनका मानना है इससे माओवादी भाग रहे हैं। अब माओवादी तो कहां होंगे वो तो मुट्ठीभर होंगे? और वो तो पहले ही सुरक्षित जगहों पर पहुंच जाते हैं। अलबत्ता गांव के लोग ही भागते हैं और जब वो

इलाका खाली हो गया जनहीन हो गया तो सरकार मानती है कि ये इलाका इन्होंने डॉमिनेट कर दिया और यहां तक ये पहुंच गए ये वापिस आ जाते हैं लोग वापिस आ जाते हैं और माओवादी वापिस आ जाते हैं। तो मैंने कहा कि आपका एरिया डॉमिनेशन तो एक–आध दिन के लिए होता है हमने वहां पर जो जुडे हुए और उजड़े गांव थे उनको दोबारा बसाया उन्तालिस गांव हम बसा पाए कुल 650 गांव उन्होंने उजाड़े थे।

विजय प्रताप : उन्होंने का मतलब सल्वा जडूम या नक्सलवाद

हिमांशु : नहीं, सल्वा जडूम। नक्सलवादियों ने तो एक भी गांव नहीं उजाड़ा क्योंकि गांव का उजड़ना नक्सलवादियों की पॉलिटिक्स के पक्ष में नहीं जाता क्योंकि लोग ही नहीं हों तो ऑरगेनाइज किसको करेंगे। ये सारे गांव दांतेवाड़ा और बीजापुर पहले दांतेवाड़ा और बीजापुर एक ही जिला था। अभी दो हो गए हैं और ये जो इन उन्तालीस गांव में एक बार भी आज तक पुलिस पर हमला नहीं हुआ। तो मैंने कलैक्टर से कहा कि सर ये है एरिया डॉमिनेशन ये उत्नालिस गांव अब आप के अंडर में आ गए अब आप आराम से बिना पुलिस के इन गांवों में जा सकते हैं आपका टीचर आ सकता है, आपका आंगनबाड़ी कार्यकर्ता जा सकता है हैल्थवर्कर जा सकता है। ये उन्तालिस आपके डॉमिनेशन में आ गए वे है असली एरिया डॉमिनेशन और आप कहो तो पूरे जिले में डॉमिनेशन करवा सकते हैं क्योंकि आप जो कहते हैं कि स्टेट कि प्रैजेंस होनी चाहिए हर गांव में। और उसके लिए आप फौज इस्तेमाल करते हो जब फौज जाती है तो कहते हो उसे उसको हम हैं कि सिक्योरिटी फोर्स लेकिन दरअसल वो है इनसिक्योरिटी फोर्स। क्योंकि लोगों के दिल में वो इनसिक्योरिटी बढ़ाती है। लोग फोर्स को देखकर डर जाते हैं क्योंकि फोर्स कहीं की भी हो, देश में कहीं भी कभी भी जानका के साथ दोस्ताना व्यवहार नहीं करती है उसकी ट्रेनिंग और मैंटलिटी में मैं रहता है। उन्हें यह पता नहीं रहता कि इस जगह उनका दुश्मन कौन है, कौन उनका दुश्मन है इसलिए वो सारी जनता को अपना दुश्मन मानते हैं। और उसके साथ वे दुश्मनों का ही व्यवहार करते हैं। जैसे ही वे गांव में जाते हैं। फिर हमारे देश में फोर्स

को ट्रेनिंग ही ऐसी मिली है कि उसको लगता है गांव की औरतें ये हमारे उपभोग के लिए हैं। गांव का मुर्गा हमारे खाने के लिए है। गांव की शराब हमारे पीने के लिए है। और गांव के लोग हमारे पीटने के लिए हैं। तो खुलकर ये ही करते हैं जो मिलेगा उसे मारेंगे, गांव की शराब लूट लेंगे। घर जला देंगे। औरतों से बलात्कार करेंगे। तो ये सिक्योरिटी फोर्स इनसिक्योरिटी बढ़ा देती है और लोग उनको देखकर भाग जाते हैं हमने उनसे कहा आप तो इनसिक्योरिटी बढ़ा रहे हैं। और ऐसे हालात में जबकि आपने गांव पर हमला कर दिया हो लोग इनसिक्योर हो गए हैं। और अब आपका टीचर जाएगा तो लोग टीचर से भी डरेंगे गांव के लोग कि कहीं ये पुलिस का आदमी न हो और जंगल मे छुपे हुए हैं। और ये देख कर जाएगा और बता देगा कि ये लोग कहां छुपे हुए हैं तो शाम को फिर पुलिस वाले आ जाएंगे और फिर हमें मारेंगे तो वे कहते हैं कि टीचर तुम भी नहीं आओ भैया। और जंगलों में छुपे हुए लोग थे हमने उन्हें वापिस लाकर गांव में बसाया एक प्रयोग शुरू किया था मेरे एक दोस्त ने कहा कि हिमांशुजी जो आपने एक हयूमन शील्ड एक्सपेरिमेंट के बारे में सुना है? हमने कहा वो क्या है तो उन्होंने कहा कि इस्ताराबूल में फिलिस्तीन में जो इस्त्रायली सेना हमला करती है तो बहुत से अमेरिका और इंगलैंड के नौजवान फिलिस्तीनियों के साथ रहते हैं। और सेना से कहते हैं कि पहले टैंक हम पर चढ़ाओ। पहले हम पर बम डालो तो हमने कहा कि यह आइडिया तो हमारी शांति सेना से बहुत मिलता–जुलता है। जो शांति सेना हम पढ़ते थे। जे पी की ही तरह हमने कहा ये हम करेंगे वहां एक गांव था और गांव का नाम था और गांव का नाम था नेन्ड्रा वो गांव तीन बार जलाया गया था और सुप्रीम कोर्ट में नंदिनी सुंदर ने एक मुकद्मा डाला था सल्वा जडूम के खिलाफ। उस मुकद्मे के दौरान जब उन्होंने यह बताया कि इतने गांव जला दिये गये हैं इतनकी हत्याएं और इतने निर्दोष लोगों को जेलों में बंद किया गया है और ये सब तो कोर्ट ने कहा कि यह ठीक है आपके आरोपों की जांच के लिए हम राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की टीम को भेजते हैं और राष्ट्रीय मानवाधिकार की टीम सारे पुलिस के ऑफिसर यहां भेजे सर्विंग पुलिस ऑफिसर थे उनकी एक टीम बनाई और कहा कि तुम वहां जाओ और पुलिस द्वारा की जाने वाली ज्यादतियों की जांच करो।

और अब वो लोग गए और एक पुलिस ऑफिसर दूसरे पुलिस ऑफिसर की जांच कर सकता है? वो उन्होंने की हम लोग बड़े उत्साह में थे। और हमने कहा कि तो अब यह सल्वा जडूम फंसा कि फंसा। हम लोग गांव–गांव जा करके और हमने लोगों को कहा अब तो भारत सरकार ने भेज दी मानवाधिकार आयोग की टीम और अब आओ और आकर बताओ सब। गांव के लोग बहुत सारे गांव के लोग आए थे। बहुत तरह के लोग आये हमारे कार्यकर्ता लोग गांव–गांव से जाकर बहुत लोगों को लाए किरायों पर लेकर गाड़ियां भर–भर कर लाए। एक गांव जो मैंने कहा 'नेन्ड्रा' जिसे तीन बार जलाया दस लोगों का कत्ल हुआ था, तीन लड़कियां गांयब हुई थीं और आधे लोग जंगलों में छुप कर रह रहे थे। और आधे लोग आंध्र प्रदेश में रह रहे थे आंध्र प्रदेश के लोगों को हम गाड़ियों में भर कर लाए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सामने उन लोगों ने बयान दिये कुछ गांव से भी लोग आए थे नेन्ड्रा गांव से उन्होंने भी बयान दिये और जब ये लोग वापिस जा रहे थे अगले दिन सुबह–सुबह तो इनको एक सल्वा जडूम कैम्प है नेन्ड्रा वहां पर सल्वा जडूम और पुलिस वालों ने इस दल को रोक दिया और कहा, कहां से आ रहे हो? तो उन्होंने कहा दंतेवाड़ा से तो उनको तो मालूम था कि मानवाधिकार के सामने बोलने गये थे और उनको यह कह पीटना शुरू कर दिया। मैं और नंदिनी सुंदर जाकर एसपी के सामने जा कर बैठ गए और हमने कहा कि यह तो बड़ी गुंडागर्दी है राष्ट्रीय मानवाधिकार की टीम आई तो एस पी साहब को किस बात का डर उन्होंने कहा कि गुंडागर्दी है तो है कर लो क्या कर लोगे अब वहां से फोन आ रहा है कि उनको वहां पर लोग पीट रहे हैं। हमने राष्ट्रीय मानवाधिकार की टीम को लगाया टीम दंतेवाड़ा की सुनवाई करके बीजापुर की ओर गई थी तो हमने उनको बताया कि जो लोग आपको बताने आए थे तो उनको पीटा जा रहा है तो उन्होंने कहा कि हम क्या करें ? हमारा काम तो सिर्फ यह था कि हम उनकी बात सुन लें बस। हम थोड़ी न रोक सकते हैं पीटने वाले को। हम लोग बड़े घबराए दिन भर उनको पीटा गया और शाम को उनके अंगूठे लगवाए गए।

विजय प्रताप : किस सन की बात है ये यह ?

हिमांशु : यह बात है सन् 2007 की और नहीं यह बात है 2008 की और शाम को उनसे स्टाम्प पेपर पर अंगूठे लगवाए गए कि हमको तो इन लोगों ने लालच दिया था कि हमको एक लाख रुपये देंगे और चलो हमारे साथ पर हम तो जाना ही नहीं चाहते थे। इसके बाद अंगूठे लगवाकर उन्हें पीट–पीटकर शाम को छोड़ दिया और चौथे दिन जाकर चौथी बार नेन्ड्रा गांव को सल्वा जडूम और सीआरपीएफ ने जाकर फिर से जला दिया। हम लोग वहां गए और हमें लगा कि अब हमको बीच में कूद पड़ना चाहिए।

प्रश्न : गांव को जलाने का क्या तात्पर्य है घर जला दिया या क्या ?

हिमांशु : उसमें क्या होता था कि गांव जलाने का जो प्रोसेस होता है एक तो जो सल्वा जडूम। पहले सल्वा जडूम को समझने की जरूरत है सल्वा जडूम क्या था? आदिवासी समुदाय के बीच में बांटने का जो तरीका था कि एक गांव पर हमला करो या हमला नहीं भी करते थे तो उस गांव में चिट्ठी भेजते थे कि आप लोगों को गांव को खाली करके सड़क के किनारे जो हमने कैम्प बनाया है उसमें आकर रहना है और अगर आप नहीं आए तो हम मानेंगे कि आप माओवादियों के साथ हैं। इसके अलावा नागा फोर्स बुलाई गई थी जिसका उस समय बहुत खौफ था और उसके बारे में यह फैलाया गया कि नागा लोग जिन्दा आदमियों को खा जाते हैं और उन पर गोलियों का असर भी नहीं होता और ये पहाड़ को भी कूद जाते हैं। आदिवासियों के बीच इनका बड़ा खौफ था नागा छोड़ दिये जाएंगे तुम लोगों के ऊपर नागा लोगों का डर दिखाकर गांवों को खाली करा दिया जाता था। वो गांव वाले अगर कैम्प में आ जाते थे तो उनको लेकरन के सीआरपीएफ वाले और पुलिस वाले दूसरे गांव पर हमला करवाते थे। तो इस गांव के लोगों ने अगर इन लोगों के गांव पर हमला किया है और हम पड़ोसी हैं तो ये सब तो हमें जानते हैं। और इन्होंने पहचान लिया है तो ठीक है बेटा तुम सरकार और पुलिस के साथ मिलकर के आज हमें मार रहे हो तो देख लेंगे तुम्हें कल। और अब हम लोग डर गए कि अब इन लोगों पर हमला किया और ये लोग हमारे साथ नहीं आए और ये चले गए जंगलों में और जंगलों में हैं माओवादी।

माओवादियों ने इनको हथियार दिया कि अबकी बार ये तुम्हें मारने आएंगे तो तुम इन्हें मारना। अब हमको पता है अब कैम्प पर हमला भी होता था और हमको पता है कि अब हम इनको मारकर आए हैं तो अब हम पर पलट कर हमला होगा। तो मेरे जिंदा रहने के लिए जरूरी है कि आप मर जाएं क्योंकि जब तक आप जिंदा हैं मैं असुरक्षित हूं। तो मेरी जिंदगी का एक ही ध्येय है कि मैं आपको मार डालूं तभी मैं सुरक्षित बनूंगा। तो जो सल्वा जडूम में थे वो गांव में रहने वालों की जान के दुश्मन हो गए और जो गांव कला है उसको पता है कि हम लोग सरकार के साथ मिलकर इनको मारना चाहते हैं तो आप हमें मारने की कोशिश करोगे तो इस तरह आदिवासी समुदाय के दो टुकड़े एक दूसरे को मारने की कोशिश करते थे आज भी वही चल रहा है कि यह बहुत ही इंटेलिजेंटली बनाया गया प्लान है और ये पूरे देश में इसको फैलाया जा रहा है। होम मिनिस्ट्री की रिपोर्ट में इसको कहते हैं लोकल रेजिस्टेंट्स ग्रुप्स देश भर में समुदाय को बीच में से बांट कर आपस में लड़वा दो जिससे समाज आपस में लड़ जाए आपको भी अपनी मेहनत करने की जरूरत न पड़े बस आप थोड़ा सा पैसा फेंक दो हमारे हथियारों पर थोड़ी हमको तनख्वाह देने में हम ही अपने समाज के लोगों को मार देंगे होम मिनिस्ट्री ने बाकायदा दंतेवाड़ा के सल्वा जडूम नेताओं को लेजाकर महाराष्ट्र में शुरू करवाया गढ़ चिरौली वगैरह में शुरू करवा रहे हैं तो ये सारे देश में उड़ीसा में वही प्रयोग शुरू कर रहे हैं शांती सेना के नाम पर हारमदवाहिनी के नाम पर ? और नेंड्रा गांव में भी यह हुआ था। उनका कहना था जो लोग कैम्प में नहीं आए हैं सरकार के साथ नहीं आए हैं मुख्यमंत्री ने बयान दिया था कि जो लोग सरकार के साथ हैं। वो तो कैम्पों में आ गए हैं और जो नक्सलवादियों के साथ हैं वो जंगल में हैं। तो मैंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखा था कि साहब कि मैं दंग रह गया आपका यह वक्तव्य देखकर। मुख्यमंत्री जी, वैसे उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ के हैं, ठाकुर साहब हैं और एक आदिवासी प्रदेश के मुखिया बने हुए हैं। और कह चुके हैं कि बन तो एक अभिशाप हैं। ये हमारे विकास में एक बाधा है। उत्तर प्रदेश के आदमी को यू. पी. में जंगल से तो डर लगता है। जंगल में रहने वाले तो जंगली हैं। ये विकास तो समझते नहीं हैं ये इन्हें समझना पड़ेगा।

नेंड्रा गांव को जब जलाया गया तो हमने तब कहा था कि सरकार की ये लाइन है कि जो जंगल में है वो माओवादी हैं। और मैंने मुख्यमंत्री महोदय को लिखा, कि आप लाखों मूल निवासियों को, जो अपने घर में रहना चाहते हैं। आप नक्सली सिद्ध कर रहे हैं। और अब आप इन्हें मारने के लिए भारतीय दल का इस्तेमाल करेंगे। लेकिन हम आपकी इस लाइन को रिजेक्ट करते हैं हम ये दावे के साथ कहते हैं कि जो जंगल में हैं वो आदिवासी हैं और हम हर हाल में मानते हैं कि इनकी रक्षा होनी चाहिए। और हम इनकी रक्षा करेंगे। हम ह्यूमन शील्ड के रूप में यहां रहेंगे और उस गांव में हम डेढ़ साल रहे और सरकार को ये सूझा ही नहीं कि इसका जवाब कैसे दे और हमारी हत्या कर नहीं सकते थे क्योंकि उससे सरकार की बहुत बदनामी होती। और सरकार वो झेलने के लिए तैयार नहीं थी। इस तरह हम लोगों का उत्साह बहुत बढ़ गया। क्योंकि हमारे हाथ में एक हथियार आ गया था। और हमने कहा कि हम अब ये दूसरे गांव में भी करेंगे। और अब दूसरे गांव के लोग भी आने लगे। कि साहब आप हमारे गांव में भी एक आदमी रख दो। जब आप रहते हो तो सल्वा जडूम वाले, फोर्स वाले हमारे गांव पर हमला नहीं कर पाते उनको डर रहता है कि वनवासी आश्रम का एक आदमी इस गांव में है ये सिलसिला चला इसी दौरान हम लोगों ने एक दफा वहां के एक माओवादी लीडर ने खबर भिजवाई कि वो मिलना चाहते हैं हम मिले तो उन्होंने कहा कि ऐसा है आप बहुत अंदर–अंदर घुस आए हैं और हमारा जो नेटवर्क है उसके एक्सपोज होने का डर है, जानकारी बाहर जाने का डर है इसलिए आप इस इलाके में काम मत कीजिए। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की मैंने उनसे कहा ऐसा है कि आपका भी जब राज आ जाएगा तब भी हमारे काम की तो जरूरत पड़ेगी ही। कुछ काम जैसे लोग बाग बच्चों को कैसे पालें? स्वस्थ कैसे रहें इत्यादि कभी भी सरकार नहीं करती और ये काम तो सामाजिक कार्यकर्ताओं को ही करना पड़ता है हमारी जरूरत तो आपको भी पड़ेगी। इसलिए हमें काम करने दीजिए हमारा आपसे न कोई विरोध है और न लेना–देना है। आप आपका काम करिए हम अपना काम करेंगे न हम आपके बारे में कभी पुलिस को बताते हैं न पुलिस के बारे में आपको बताते हैं। आजकल आपको बताया। तो उन्होंने कहा कि नही नहीं यह नहीं होगा। हमने कहा

आप मार सकते हो मार दीजिए। उससे हम डरते नहीं हैं। तो खैर उन्होंने कहा आप रुकिए हमने कहा हम रुक जाते हैं। रात भ्ज्ञर हम उनके पास रहे उन्होंने खूब बढ़िया दाल चावल खिलाया, रात भर बात हुई और सुबह हम बहुत अच्छे दोस्त थे। ठीक है आप करिए और हम देखेंगे और अपने ऊपर बात करते हैं बाद में पता चला कि खैर इसी दौरान हम लोगों ने वहां ..... उन्होंने..... उनसे हमारी बात हुई हम लोग जो सरकार की ये योजना है सल्वा जडूम जिसके तहत उसने आदिवासियों को दो भागों में बांट दिया है और दोनों एक–दूसरे से लड़ रहे हैं उससे गांव खाली हो जाएगा और गांवों की ये जमीन उद्योगपतियों को दे देगी सरकार। हम इसको फेल करना चाहते हैं। इसको काउंटर करना चाहते हैं और इसके लिए हम ये कर रहे हैं कि जो लोग कैम्प में चले गए हैं। उन लोगों को हम वापिस लाएं लेकिन जब वे वापिस आते हैं तो आपसे जुड़े हुए लोग उनकी हत्या कर देते हैं। इसलिए आप ये इन्श्योरेंस कीजिए कि जो लोग सल्वा जडूम कैम्प से वापिस आएंगे आप उनकी हत्या नहीं करेंगे। उन्होंने कहा हम स्वीकार करते हैं, हम नहीं मारेंगे और उसके बाद हमने कहा वैरी गुड। ये 2008–2009 की शुरुआत की बात है, बरसात का टाइम था वो 2008 अगस्त–सितम्बर की बात है। इस बात से उत्साहित हो कर हमने पदयात्रा शुरू की और हमने इस दोस्ती यात्रा का नाम दिया सलवा जुडूम कैंप में भी गए और कैंप में रहने वालों को हमने कहा कि आप चलिए और यदि माओवादी आप पर हमला करेंगे तो हम आपको बचाएंगे। हम ह्यूमन शील्ड के रूप में आपकी माओवादियों से रक्षा करेंगे और हमने गांव में कहा कि आप लोग जो जंगलों में छुपे हुए हैं आप भी वापिस आइये और खेती–बाड़ी शुरू कीजिए। और आपके ऊपर अगर सरकार या सल्वा जडूम के लोग हमला करेंगे तो हम आपकी ह्यूमन शील्ड के रूप में बीच में आयेंगे। जब हमारी पद्यात्रा चल रही थी तो फिर रास्ते में पांच–छह दिन बाद माओवादियों की टुकड़ी ने हमको रोका। शाम को पहले वो गांव वालों के कपड़ों में आए और कहा तुम्हारी यहां जरूरत नहीं है। कहा भाई जिनको हमारी जरूरत है उन्होंने हमसे कहा है कि यह गांव वाले बसना चाहते हैं बस आप आइये। अपने कार्यकर्ता यहां रखिए और इतने कार्यकर्ता तो हैं नहीं। इसलिए हम गांव–गांव जा रहे

हैंम और उनसे बात कर रहे हैं। उनको समझा रहे हैं कि आइये वापिस आइये यहां बसिए। हम हैं यहां नेंड्रा में हैं नेंड्रा के आसपास की पदयात्रा चल रही थी और अगले दिन वो अपनी टुकड़ी और बंदूकें लेकर आ गए। और उन्होंने कहा कि हमने आपसे कहा था कि आप वापिस जाइये और नेंड्रा वालों ने कैसे आपको वहां रहने को कहा। और हमने कहा कि हम तो वापिस नहीं जाएंगे तो उन्होंने कहा कि सामना छीन लो। हमारे मोबाइल झोले वगैरह। इलाके में वैसे ही लोगों के पास खाने–पीने, खाने के बर्तन, साइकिल पर लाद कर अपने–अपने झोले लादकर चल रहे थे। तो उन्होंने साइकिल छीन ली, खाने के बर्तन छीन लिए। खाने–पीने का सामान छीन लिया झोले भी छीन लिए, मोबाइल वगैरह सब छीन लिया अब उसके बिना चलना मुश्किल था तो हमने कहा ठीक है और हम वापिस आए अब वो हमने नेंड्रा में कहा कि माओवादियों ने कहा है कि हम गांव में भी नहीं रह सकते तो गांव वाले रोने लगे एक मुझे याद है कि एक बूढ़ी औरत थी, विधवा थी उसका एक लड़का था चौदह साल का वो खेल रहा था और फोर्स आई और वो भागा उसके पेट में गोली मार दी और उसको उठाकर ले गए कि वो माओवादी मैं एसपी से मिला और मैंने कहा बच्चे को उठा कर ले गए। तो वो सोता नहीं वो माओवादी था हमने कहा वो कैसे माओवादी था। तो कहने लगे कि उसने हरे रंग की शर्ट पहनी हुई थी। मैंने कहा जितनों ने हरे रंग की शर्ट पहनी होगी सबको मार देंगे आप खैर हमने वकील किया। हमने कहा आप उस जेल में नहीं रख सकते। उन्होंने उसे किशोर सुधार गृह में रख दिया हमने वकील की मदद से जमानत वगैरह करवाई और उसकी मां को मिले इस दौरान ले जाकर के उसे लगा था मेरे बेटे को गोली मार दी वो मर गया होगा। हम लोग उसको लेकर के गए उसको वहां दिखाया तो उसको सांतवना हुई कि मेरा बेटा जिंदा है । दो–तीन महीने में हमने उसकी जमानत करवाकर उसे उसकी मां को सौंप दिया और कहा देख ये है तेरा बेटा। उसके पांव में जो गोली लगी थी आर–पार हो गई है वो घाव भी भर गया तो वो औरत रोने लगी। बूढ़ी औरत कहने लगी कि तुम चले गए तो मेरे बेटे को फिर मार देंगे। कौन बचाएगा इसे। और हमें गुस्सा आया कि लोगों के लिए हम काम नहीं कर सकते। और वहां से लौटकर के मैंने दो बार हमला इंटरनेट पर माओवादियों पर

लेकिन तब तक हमारी टीम थी वहां हम गांव नहीं छोड़ते। उन्होंने कहा कि गांव तो छोड़ना पड़ेगा। तो मैंने कहा मना कर दो कि हम गांव नहीं छोड़ेगे। फिर फोन आया कि वो कह रहे हैं कि यदि गांव नहीं छोड़ा तो गांव वालों को मार देंगे। मैंने ये मैसेज भी फ्लैश कर दिया देश भर में। अब तो देश भर में बहुत हमला शुरू हो गया ये कैसे जनता के लोग हैं जो जनता के खिलाफ हैं फिर जो प्रैशर पैदा हुआ उससे उन्होंने रिट्रीट किया और बाद में ग्रैज्युअली वो इस स्टैंड पर पहुंचे कि चूंकि आपका काम नॉनपॉलिटिकल हैं इसलिए आप इस इलाके मंमे काम कर सकते हैं। यहां तक वो इस बैकग्राउंड में आए। लेकिन माओवादियों के हमले को तो हम न्यूट्रलाइट करने में हम सफल रहे लेकिन स्टेट को हम नहीं समझा पाए कि हम तुम्हारे खिलाफ नहीं हैं और बड़ा क्लियर था। शांता सिन्हा यहां आई। बाल अधिकार आयोग की अध्यक्ष तब एसपी कलैक्टर सब वहां बैठे हुए थे और हमने उन्हें बहुत साफ–साफ समझाया, हमने कहा देखिए स्टेट का मतलब सिर्फ पुलिस नहीं होती। कि यदि गांव में पुलिस जा सकती है तो स्टेट प्रैजेंस है। गांव में अगर टीचर दे सकता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जा सकती हैं तो भी स्टेट प्रैजेंस उसे मानिये। और अगर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, टीचर के घुसने पर कहीं अगर माओवादी रोंके तो हम आगे–आगे चलेंगे और अगर उन्हेांने टीचर, आंगनवाडी, कार्यकर्ता, स्वास्थ्य कार्यकर्ता पर हमला किया तो हम झंडा उठाएंगे इनके खिलाफ आप करिए तो सही है। हमने आरटीआई में ये पूछा कि कितने टीचर्स की हत्या की है? माओवादियों ने कितने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की हत्या की है तो पता चला एक भी नहीं। लेकिन दंतेवाड़ा मे तो ये सब बंद किया गया था एक योजना के तहत कि ये बड़ा गांव सैनिटाइज हो गया है माओवादी विहीन हो गया है। और इसमें शिफ्ट दिखाया कि ये कैम्पों में आ गए हैं। 1350 गांव थे बीजापुर दंतेवाड़ा जिले में कुल मिलाकर 7.5 लाख आबादी थी। 644 गांव की साढ़े तीन लाख और सल्वा जडूम कैम्प में अधिकतर संख्या 56 हजार हुई थी एक दफा बस –मैक्सीमन। यानी 3 लाख लोग तक भी जंगलों में थे लेकिन सरकार ने इन 644 गांवों के सारे स्कूल सारी आंगनवाड़ी सारे राशन को डाईवर्ट कर दिया कैम्पों ने सारा फंड डाइवर्ट कर दिया कैम्पों में, भयंकर भ्रष्टाचार किया उसमें। हमने तो यह पूछा कि तुम यह

बताओ 644 गांव वीरान हैं और इनका राशन आप कैम्पों में दे रहे हो। कैम्पों की जनसंख्या है 56 हजार और इन गांवों में कितने लोग थे? आरटीआई में पूछा तो उसका जवाब नहीं दिया। 3.50 लाख लोगों का चावल उन तथाकथित 56 हजार लोगों को देते थे हमने कहा ये 56 हजार लोग 3.50 लाख लोगों का चावल कैसे खा सकते हैं? दरअसल यह वो जो सब्सिडी थी चावल पर रमन सिंह अपनी जेब से थोड़ी न देते हैं। वो तो वही जनता का पैसा है जो वो कहते हैं कि मैं आपको सस्ता चावल दे रहा हूं। आठ रुपये का चावल आप खरीद कर जो दो रुपए में दे रहे हैं वो जो 6 रुपये है वो पब्लिक का ही तो है और वो चावल जाता है जनता के पास वो जो चावल जब फिर ब्लैकमार्किट में जाता है उसमें जो करोड़ों रुपये बनते हैं। उससे फिर चुनाव लड़ा जाता है वो जो 3.50 लाख लोगों को चावल था वो चावल 56 हजार लोगों को दिखाकर बाकी सबका घोटाला किया जा रहा था तो हमने जब ये सारी चीजें उठानी शुरू की तो सरकार को ये लगा कि ये जो सारा हम खा रहे हैं सल्वा जडूम के नाम पर वो बंद हो जाएगा। तो सरकार ने अपने हमले तेज कर दिये आश्रम तोड़ दिया जबकि हमने कहा कि अगर आपकी लड़ाई अगर माओवाद के खिलाफ हिंसा के खिलाफ है तो उसमें हम आपकी मदद कर रहे हैं। सीधे–सीधे हमने जो 39 गांव जो रिहैबिलेट करे हैं उनमें कोई वायलैंस नहीं है और लाइये हम 644 गांव रिहबलेट कर देते हैं। 644 गांव में कोई वायलैंस नहीं होगा लेकिन सरकार को वायलैंस खत्म करना ही नहीं था। तो उसने हम पर अपना हमला बढ़ा दिया और इतना बढ़ाया कि कार्यकर्ताओं को जेलों में डाला, आश्रम तोड़ा, एफसीआरए कैंसल कर दिया। संस्था का रजिस्ट्रेशन कैंसल करने का नोटिस दे दिया। आश्रम टूटने के बाद हम जिस किराये के मकान पर रहते थे वो खाली करा लिया। घर से बाहर जहां बैठे थे वहां भी गांव वालों को पुलिस वालों ने जबरन भेजा कि हम यहां भी नहीं बैठ सकते और सार्वजनिक मीटिंग में पुलिस और सल्वा जडूम के नेताओं ने धमकी दी यदि पूरे जिले में किसी ने एक इंच जमीन भी खड़े होने को दी तो हम उसका कत्ल कर देंगे। एसपी की उपस्थिति में तो कुल वहां काम करना उन्होंने असंभव बनाया तो हमने निश्चय किया कि ये लड़ाई तो खत्म नही होगी और लड़ाई जारी रहेगी।

प्रश्न : क्या सरकार लिखित रूप में कुछ इंस्ट्रक्शन देती थी? या सरकार गृह मंत्रालय से कोई परिपत्र आदि निकलवाती थी ?

उत्तर : जैसा कि मैंने बताया स्टेट से वो घोषित कर रहे थे। वो अखबारों की कटिंग है और जो लोग स्टेज पर चढ़कर एसपी की उपस्थिति में ये बोल रहे थे उनके खिलाफ जो वारंट हैं वो हमारे पास पड़े हैं और पुलिस कहती थी कि ये लोग तो फरार हैं हमें मिल नहीं रहे हैं। और हम कोर्ट में दिखाते थे कि साहब ये देखो ये एसपी बैठा है और ये वो आदमी बैठा है और रेप कांड के लिए उसके खिलाफ वारंट हैं और एक ही नहीं अनेकों अपराधों में। अनेकों गांवों को जलाने में और वो देखिए ये एसपी साहब के साथ गले में हाथ डालकर बैठा है। इसे पकड़िए और ये हमारे खिलाफ है। तो एसपी साहब को भी नहीं दिख रहा। मीडिया को भी नहीं दिख रहा वो आदमी।

प्रश्न : कोर्ट इस सिलसिले में किस तरह का एक्शन ले रही थी ?

उत्तर : हमारे रहते तक कोर्ट ने। उस समय हमें जिस तरह का प्रैशर क्रिएट कर पा रहे थे जैसे कि मैं एक केस बताता हूं 6 बच्चियां थी। जो कि गैंग रेप विक्टिम थी। पहले तो थाने में उनकी एफआईआर ही नहीं लिखी क्योंकि वो पुलिस वाले और एसपीओ ही थे आरोपी। फिर हमने एसपी को लिखकर दिया तो उन्होंने 6 महीने तक कोई कार्यवाही नहीं की। फिर हमने कोर्ट में धारा 156 के तहत प्राइवेट कंपलेंट दायर की। कोटा में जेएमएफसी कोर्ट है जहां सल्वा जडूम का बड़ा कैंप है। और रास्ते में तीन और कैंप पड़ते हैं और इन लड़कियों के जो बलात्कार करने वाले थे। वो उन्हीं कैंपों में बंदूकें लेकर बाकायदा वहां के लीडर थे। तो जज साहब कहते थे कि इन लड़कियों को यहां आकर अपना बयान देना पड़ेगा। जबकि कानून कहता है कि यदि कोई लड़की लिखकर दे रही है तो आप केस रजिस्टर कर लीजिए लेकिन जज साहब केस ही नहीं रजिस्टर करते थे, कहते थे कि नहीं आपको यहां आकर बयान देना पड़ेगा। और आज साहब मेरी तबियत ठीक नहीं मैं कल सुनूंगा। उन्होंने पूरी कोशिश

की कि ये बयान दर्ज करा ही न पाएं लेकिन हम भी अड़े ही हुए थे कि हम दर्ज कराके रहेंगे और हम भी लड़कियों को पूरी तरह प्रोटैक्ट करके जैसे दो–तीन लोग आगे और कुछ लोग उनके पीछे चलते थे, वकील और हमारे साथी आदि जाते थे और बाहर से वो लोग हमें डराने के लिए तैयार रहते थे। लेकिन हम लोग नहीं डरे और आखिरकार बयान दर्ज हो ही गया और जब बयान दर्ज हो गया तो बोले कि अब गवाह लाओ। अब गवाह उनके मां–बाप ही थे। तो इस तरह छह महीने तक उन्होंने कोशिश की केस रजिस्टर न हो लेकिन आखिरकार उन्हें करना पड़ा केस रजिस्टर हो गए। वारंट इशू हो गए लेकिन केस की तारीख नहीं पड़ी थी हमारा जो वकील है उसके घर एसपी साहब पहुंच गए कि गोली से उड़ा देंगे यानि की बहुत ही खतरनाक स्थिति है दंतेवाडा की। दंतेवाड़ा में मुंबई से वकील पहुंच गए क्योंकि ये तो विश्वास ही नहीं हो सकता कि आप हिन्दुस्तान के किसी जिले में जा ही नहीं सकते। अब वो हाई कोर्ट के वकील कानून के नशे में दंतेवाड़ा पहुंच गए। कि वो बोले कि आदिवासियों की हालत के बारे में जानना है तो किसी ने कहा कि कल्लूरी साहब के पास पहुंच जाओ। कल्लूरी साहब वहां के डीआई थे और बाद में वो एसएसपी बन गए। तो **कल्लूरी साहब के पास भेज दिया अब कल्लूरी साहब के पास पहुंच कर और बोले के मैं मुंबई का वकील हूं और मैं यहां के आदिवासियों की हालत के बारे में जानना चाहता हूं। उन्होंने वहां बैठा दिया। अब उन्हें वहां बैठे हुए दो–तीन घंटे हो गए वहां** लोग आते–जाते रहे तो फिर वकील साहब ने बोला कि साहब मेरा भी कुछ करिये तो उन्होंने कहा कि ठीक है अभी करते हैं तो वभी उन्होंने थानेदार को बुलाकर कहा कि इसे बंद कर दो ये साला नक्सलियों का एजेंट है। वकील साहब बहुत घबराए। अब साहब कल्लूरी साहब तो उठकर चले गए। और वकील साहब की जो पांच–छह घंटे परेड हुई है जो पुलिस वाला आ रहा है गाली–गलोच मारने की बातें कि साले तुझे गोली से सूट कर देंगे। तुझे इस तरह से मारेंगे कि तेरी लाश भी नहीं मिलेगी। तो उसे दिन उन्होंने वकील साहब को रात में बस में बिठाया वो डर के मारे थर–थर कांप रहे थे। और वो इस तरह से भाग गए तो दंतेवाड़ा में ये हालत है। एक बहुत बड़ी संस्था है एचआरएलएल (ह्यूमन राइटस लॉ नेटवर्क) उसके वकील दंतेवाड़ा में हमारे

साथ काम कर रहे थे। हमारे कार्यकर्ता गोपा कुंजाम जो पूरे रिहेबलिटेशन के इंचार्ज थे उनको मानवाधिकार दिवस के दिन उठाया गया मेरे सामने से और उनपर केस बनाया गया कि साहब इन्होंने छह महीने पहले एक आदमी की हत्या की थी और उनको ले गए तो मैंने एचआरएलएन में फोन किया कि साहब क्या किया जाए तो जो वहां से ..... गोनजालविस हैं वहां के चीफ उन्होंने कहा कि जो एलवन हैं जो वकील हैं हमारे और आपके पास हैं उससे कहो कि वो थाने में जाए क्योंकि वो थाने में जा सकता है। तो वो वकील साहब चले गए कानून के नशे में थानेदार ने कहा कि तुम्हारी इतनी हिम्मत कि दांतेवाड़ा में तुम थाने में आ गए। दंतेवाड़ा के थानेदार के सामने वकील तो मुंह ही नहीं उठा सकते हैं। और वकील साहब को वहां थाने में लटका दिया गया और बहुत पिटाई की और कोपा को भी लटका दिया। अगले दिन अगले दिन वो सूजे हुए बदन के साथ आए और आज तक उनकी एफआईआर तक नहीं हुई है उन वकील साहब की जबकि वो ह्यूमेन रॉइट लॉ नेटवर्क के वकील हैं। एलवन गोपको उनका नाम है और एमनैस्टी इंटरनेशनल तक ने उनके पक्ष में बयान जारी किया। दंतेवाड़ा में कोई कानून नहीं चलता वहां कलैक्टर ने कोशिश की कि वो आदिवासियों की मदद करे। अभी जब तीन गांव जलाए गए और हमने ये खबर फ्लैश की कि भई तीन गांव जला दिये गए हैं सलवा जडूम के लोगों ने और जलाने वाला कौन वही रेप कांड का आरोपी जिसके खिलाफ आरोप हैं और जो पुलिस को मिल नहीं रहा है वो पूरी सरकार को लीड कर रहा है गांव जलाने में 'करटम सूर्या' । हिन्दुस्तान टाइम्स ने जिसके बारे में फ्रंट पेज पर छापा 'एबसकोंडिंग बट ऑन ड्यूटी' अगले दिन एडीटोरियल छापा द रेन ऑफ करटेन सूर्या, करटने सूर्या का शासन काल अगले दिन जब कलैक्टर वहां लेकर गया अपना ट्रक राशन से भरा हुआ कि मैं आदिवासियों को राशन दूंगा ये उनके घर जलाकर आये हैं। कलैक्टर को गाली देकर करटम सूर्या ने भगा दिया जो रेप कांड में एबस्कोंडिंग है। कलैक्टर को कहा कि गोली से मार देंगे, तू भी माओवादी है। तो मुख्यमंत्री ने कलैक्टर तक को भगा दिया उस जिले से। दंतेवाड़ा में ये नहीं कि केवल हम नहीं कर सकते आदिवासियों की सेवा, बल्कि कलेक्टर भी नहीं कर सकता आदिवासियों की सेवा। आप आदिवासियों की तरफ हो ही नहीं

सकते। जो सिस्टम के बाहर हैं न केवल वही बल्कि जो सिस्टम के अंदर हैं वो भी नहीं हो सकते आदिवासियों की तरफ। अगर कोई आदिवासियों की तरफ है तो वो नक्सलवादियों की तरफ है और ये एक खतरनाक ट्रेंड है कि जो पैसे वाले लोग हैं ये अपने कुछ पुलिस अफसर खड़े कर लेते हैं जो न तो कानून को मानेगें और न आपके सिस्टम को मानेगें उनका एक पैरलल सिस्टम होगा और इस सिस्टम को वो सारे देश में फैला रहे हैं। वो कह रहे हैं खुलेआम किलयरली कि हम यही पैटर्न लागू करेंगे सारे देश में। न वो आपके कोर्ट के अंतर्गत आएंगे और जो कानून के मुताबिक काम करेगा उसपर वो हमला करेंगे। तो आपकी चुनी हुई सरकार उस पैरलल सिस्टम के लिए काम करेगी। आपके ही पुलिस अफसर उस पैरलल सिस्टम में चले जाएंगे। वो तुम्हारे सिस्टम को मानेंगे ही नहीं। है तुम्हारे पास वारंट तो अपने पास रखे रखो। वारंट को लागू कौन करेगा। उन्हीं पुलिस वालों को तो कहेंगे आप कि वो वारंट लागू कर दे वो नहीं करते। सुप्रीम कोर्ट भी क्या कर लेगा? वो कंटैम्पट करेंगे सुप्रीम कोर्ट कटैम्प्ट का ऑर्डर पास कर देगा वो कंटैम्प्ट को लागू करवाने के लिए कौन जाएगा कि फलां आदमी ने कंटैम्प्ट किया है उसको पकड़ कर लाओ कौन पकड़ कर लाएगा वो ही पुलिस वाला तो पकड़ने जाएगा वो जाता नहीं अब सुप्रीम कोर्ट का जज तो उटकर जाएगा नहीं तो अब आपको जो करना है कर लो। ये लिंगा कोडोपी बैठे हुए हैं इनको घर से उठाकर ले गये और वहां के अब सिस्टम यह है कि यदि आप उद्योगपति हैं मुझे आपके गांव में जमीन चाहिए तो मैं आपके गांव के कुछ लोगों को दलाल बनाऊंगा और उसके थ्रू गांव की एकता तोडूंगा और मैं गांव के लड़कों को मोटरसाइकिल दूंगा, मोबाइल दूंगा, शराब पिलाऊंगा और कहूंगा बेटा ऐसा है फैक्ट्री खुलेगी तुम्हें नौकरी मिलेगी, खेती–बाड़ी में क्या रखा है अब वो गांव के नौजवान उद्योगपति के साथ मिल जाते हैं। तो दंतेवाड़ा में भी वहीं प्रयोग किया जा रहा है कि गांव के कुछ लड़कों को पहले ये जो भ्रष्ट पुलिस वाले हैं जो कारपोरेट्स लोगों के लिए काम कर रहे हैं वो उठाकर ले जाते हैं और पूछते हैं कि बताओ तुम्हारे गांव में कौन–कौन लोग हैं जो फैक्ट्री लगने का विरोध कर रहे हैं और फिर उनको माओवादी कह कर जेल में डाल

दिया जाता है। लिंगा को भी घर से उठाकर ले जाया गया और कहा गया तुम पुलिस के मुखबिर बन जाओ। वहां पुलिस के मुखबिर को कहा जाता है स्पेशन पुलिस ऑफिसर, उसको तीन हजार रुपये तनख्वाह दी जाती है। एक राइफल दी जाती है **और फिर वह वहां एक बाड़े में रहते हैं और उनको खुली छूट है बंदूकें लेकर जाते हैं।** दो–दो मिलकर और गांवों पर हमला करते हैं शराबें लूटो, मुर्गे लूटो, औरतें लूटो, पैसा, जेवर लूटो, कान की बालियां खींच लेते थै जो जिसने पैसा रखा है छीन लेते हैं अपने खर्चे के लिए सरकार तो सिर्फ तीन हजार रुपये देती है उससे तो खर्चा पूरा नहीं होता है। उन्हें फुल छूट है आदिवासी लूटने की इन्हें भी उठाकर ले गए और कहा एसपीओ बनो, इन्होंने कहा नहीं बनूंगा तो इन्हें चालीस दिन थाने में बंद करके रखा। इनकी बुआ हमारे पास रहीं और कहा कि ऐसे–ऐसे मेरे भतीजे को ले गए हैं। हमने कहा हिबैकॉरपस डालो कोर्ट में तो उन्होंने हाई कोर्ट में हिबैकॉरपस डाली कोर्ट में सरकार ने कहा हमने इन्हें गिरफ्तार नहीं किया है ये तो अपनी मर्जी से एसपीओ बने हैं और दिखाया अपांइटमेंट लैटर दिखाया कि देखिए दस्तखत भी हैं अब गन पाइंट पर इन्होंने दस्तखत भी करे। कोर्ट ने कहा हमारे सामने पेश करो। पेश किया तो उन्होंने कहा मैं तो एसपीओ नहीं बनना चाहता। मैं तो घर वापिस जाना चाहता हूं। कोर्ट ने कहा इन्हें घर जाने दो। घर की तरफ चले इन्हें पता था कि पुलिस तो इन्हें छोड़ेगी नहीं क्योंकि कैद के दौरान ही इन्होंने कह दिया था कि अगर तू कोर्ट से छूट भी जाया तो हम तुझे गोली से उड़ा देंगे। इन्हें पता था कि इन्हें रास्ते में गोली से उड़ा दिया जाएगा। तो ये रास्ते में गाड़ी से उतर गए। वो ही हुआ रास्ते में पुलिस ने गाड़ी रोक ली और कहा कहां है लिंगा। लिंगा तो मिले नहीं उनके बड़े भाई किसने हैबिस कॉरपस डाली थी उसे उठा लिया और कहा तुम नक्सलाइटों के पैसों से कोर्ट में केस करते हो बड़े भाई को ले गये ये मेर पास आए छुप कर के कि साब मेरे बड़े भाई को ले गए तो मैंने तुरंत एक फैक्स बनाया और हाईकोर्ट को भेजा कि जो एप्लीकेंट था आपके कोर्ट में पुलिस वाले उसे उठा ले गए तो तुरंत हाई कोर्ट ने पूछा तो दो दिन बाद इनके भाई को छोड़ दिया ये अपने गांव छुप कर पहुंच गए। गांव में इनको पता था कि पुलिस छोड़ेगी तो है नहीं तो ये घर में न सो कर गांव के बाहर

खंडहर में सो रहे थे वो ही हुआ पुलिस ने गांव के ऊपर छापा मारा तो उसको लगा कि टूटे घर में तो कोई होगा नहीं तो गांव के सब घरों को खुलवाकर देखा और लिंगा नहीं मिला तो इनके पिताजी को ले गए। छः औरतों को भी ले गए फिर ये मेरे पास आए मैंने कहा तुझे छोड़ेंगे तो नहीं तुझे तो मार देंगे। तो इन्हें दिल्ली भेज दिया और तब से ये दिल्ली में हैं और इसी दौरान वहां पर एक कांग्रेस लीडर के घर नक्सलवादियों का हमला हुआ तो पुलिस ने कहा साहब ये हमला इन्होंने किया है और आजाद जो प्रवक्ता सीपीआई (माओवादी) पार्टी के उनके मरने के बाद नक्सलियों ने इन्हें प्रवक्ता नियुक्त किया है और ये मास्टर मांइड हैं उस हमले के इनको संबंध हैं हिमांशु से अरूंधती राव से और मेधा पाटकर से और नंदिनी सुंदर से हैं औश्र इन सबको पकड़ो ये सब माओवादी हैं तो वहां कुछ भी हो सकता हैं, कुछ भी कर सकते हैं ये लोग। आज भी पैंडिंग हैं केसे इनके खिलाफ अब ये जिद कर रहे हैं वापिस जाने की अब पता नही ये कितने दिन जिंदा रहेंगे या जेल के बाहर रहेंगे वापिस जाते ही या तो इन्हें जेल में डाल देंगे।

मैं अपने को एक हारा हुआ सिपाही कहता हूं मैं लड़ा हूं, मैंने कोशिश की कि मैं लडूं और चूंकि मैंने जानबूझकर लड़ाई नहीं शुरू की मैं तो सेवा ही करने गया था मैं तो शिक्षा और स्वास्थ्य पर ही काम कर रहा था बेसिकली लेकिन जिन लोगों की सेवा कर रहा था उन पर जब हमला हुआ तो मैं न बोलूं ये मुझसे नहीं हो सकता था यह मेरा धर्म नहीं कहता था जब मैं उनके लिए बोला तो सरकार ने स्टेट ने मुझ पर हमला किया और किस तौर पर हमला किया कि लड़ाई खत्म ही हो जाए। हमने लड़ाई जारी रखने के लिए स्ट्रेटनिकली अपने–आपको रिलोकेट किया कि हम यहां से लड़ेगे क्योंकि वहां तो तुम लड़ने नजही दे रहे हो तो ये अभी तक की जर्नी है। ये थी छात्र जीवन से आज तक की यात्रा।

अब हम बातचीत करेंगे.....

सुरेन्द्र कुमार, (जी.पी.एफ. चेयर) : धन्यवाद हिमांशु जी अब इनकी बातों के आधार पर कोई कमरे या प्रश्न हो तो आप लोग आमंत्रित हैं।

प्रश्न : .....फंडिंग को लेकर

हिमांशु : अब फंडिंग की बात कर रहे हैं तो हम लोग रिहैब्लिटेशन के लिए बहुत सारे इंडविजुवल्स क्योंकि उससे पहले तक तो जैसा पहले मैंने आपको बताया हम लोगों ने स्टेट हेल्थ रिर्सोस सेंटर के साथ हमने कार्यक्रम चलाया उसके लिए हमें सारी फंडिंग वहां से ली थी और जो एजूकेशन का प्रोग्राम था उसका सारा वो सारा सी.आर.एस. के साथ हमारी फंडिंग थी फिर जो महिला स्वयं सहायता समूह उनको खेती–बाड़ी और अन्य काम–धंधों में उनकी कोषक उन्नयन वगैरह।

प्रश्न : कौन फंड करता था?

हिमांशु : प्राइवेट फंडिंग एजेंसियां जैसे हम लोग एक एनजीओ हैं, संस्थाएं हैं और एफसीआर के थ्रू पैसा देते हैं, हम उकने साथ काम कर रहे थे, लेकिन जब मानवाधिकार से जुड़े ह्यूमन इश्यूज उठाने शुरू किये तो सरकार ने हमारा एफसीआरए सस्पेंड कर दिया और कहा कि जनहित में उन्होंने हमारा एफसीआरए सस्पेंड कर दिया और कोर्ट में जब पूछा कि जनहित क्या होता है ? जनहित में तो चार चीजें हैं उसमें यह है कि यदि ये संस्था विदेशी देशों के साथ आपके भारत की प्रभूसत्ता पर मिलकर आघात कर रही हो या फेयर इलैक्शन में बाधा डाल रही हो इने तीन–चार चीजों में क्या कर रही है। सरकार ने कहा हमने कहा था कि कलैक्टर ऑफिस में रिकॉर्ड लेकर आओ पर ये नहीं आए हमने कहा कलैक्टर ऑफिस में रिकॉर्ड न लाना तो कहीं नहीं लिखा ये तो कहीं नहीं लिखा और ये लिखा है कि आप संस्था के ऑफिस में जाकर रिकॉर्ड चैक कर सकते हैं कर लीजिए न इनके ऑफिस में जाकर जांच। अलबत्ता वो मुकदमा अभ्झी चल रहा है होममिनिस्ट्री के साथ तो उन्होंने बहाने

से एफसीआरए कैंसिल कर दिया। बाद मैं जब एफसीआरए कैंसिल हुआ तो बहुत सारे लोगों ने कहा अच्छा सीधे हम लोग मदद करेंगे लोगों की आप संस्था के थ्रू मत लीजिए तो वे राशन दे देते थे। दवाइयां दे देते थे, कार्यकर्ताओं को फैलोशिप दे देते थे और हम लोग वहां काम कर रहे थे।

प्रश्न : फैलोशिप देने का क्या तरीका था ?

हिमांशु : जैसे एक्शन है उसने कहा हमारे फैलो रहेंगे वहां, और काम करेंगे दंतेवाड़ा में।

प्रश्नः एक्शन एड को कहां से फंडिंग मिलती है?

हिमांशु : मैंने ये ट्रैक नहीं किया कि एक्शन एड को कहां–कहां से फंडिंग मिलती है।

प्रश्न : नहीं–नहीं सपोज किसी इंडस्ट्रीज से फंडिंग आती है तो आप जरूर ट्रैक करेंगे कि वहां से फंडिग आ रही है तो

हिमांशु : एक्शन एड की फंडिंग इंडस्ट्रीज की है यह मैंने कभी नहीं सुना।

प्रश्न : यही मैं कह रहा हूं पर आप बहुत कंविस्ड हैं कि ये इंडस्ट्रीज की नहीं हैं तो आपने ये पता करने की कोशिश की होगी मुझे भी पता है कि ये इंडस्ट्री ज की नहीं हैं पर ये कहां से आती हैं? मुझे ठीक से नहीं पता है इसलिए मैं जानना चाहता हूं।

हिमांशु : टाटा ने हमें फंड ऑफर किया जो हमने रिजेक्ट कर दिया।

प्रश्न : इसलिए मैंने ये प्रश्न आपके सामने रखा जिससे आप दोनों में अंतर कर सकेंगे। आपको पता है कि टाटा इंडस्ट्रीज है और उससे फंड लेने में बदनामी हो सकती है। पर एक्शन एड के कस्विसिंग क्रेडैश्यिलस- हैं वो क्या हैं? मैं इसलिए ये पूछ रहा हूं क्योंकि मुझे खुद फंड चाहिए बहुत से कामों के लिए बहुत सी संस्थाएं हैं जैसे प्रिया जिनके बारे में हमें पता है कि उन्हें कहां से फंड मिलता है। हम ऐसी संस्थाओं से

फंड नहीं लेना चाहिए। इसलिए मेरा मानान है कि आपको जरूर ट्रैक करना चाहिए कि उन्हें कहां से फंड मिल रहा है ?

हिमांशु : देखिए हम फंड लेते वक्त यह ध्यान रखते थे कि एक तो कोई एजेंसी हमें डिक्टेट न करे। हम जो कर रहे हैं हम तो वो ही करेंगे और हमारी विचार धारा में हम कोई भी संशोधन स्वीकार नहीं करेंगे फंडिंग देने वालों से हमारी विचारधारा में सिर्फ जनता ही संशोधन कर सकती है और हमारे साथी कार्यकर्ता वो जिस चीज को ठीक समझेंगे वो ही होगा इस संस्था में फंडिंग एजूंसी हमें डिक्टेट करेगकी तो हम वो फंड नहीं लेंगे तो एक्शन एड ने कभी भी या जो भी संस्थाओं के साथ हमने काम किया उन्होंने हमेशा हमारे प्रपोजल को ज्यों का त्यों मान लिया। हमारे कार्य करने के ढ़ंग को न सिर्फ उन्होंने स्वीकार किया बल्कि उन्होंने दूसरों को भी कहा कि आप लोग जा कर देखिए ये लोग कम्युनिटी से सीखरक कम्युनिटी के साथ मिलकर के कैसे चीजों को इवॉल्व करते हैं और उस पर काम करते हैं इसलिए हम लोग उनके साथ काम कर पाएं।

प्रश्न : यदि टाटा के भी यही कंडहीशन्स होते तो क्याआप नहीं स्वीकारते ?

हिमांशु : यह बहुत हाइपोथेटिकल प्रश्न है। और क्योंकि हमें टाटा के बारे में हमें पहले से मालूम था और टाटा बस्तर में भी आकर ऊटपटांग काम कर रहे थे वहां पर जो उन्होंने लौहडीपुरा में जो स्टील प्रोजेक्ट लगाना शुरू किया है उसमें जिस तरह से जन सुनवाई की जगह उन्होंने लोगों को पुलिस भेज कर गांव में कैद कर दिया जनसुंनवाई में लोगों को जाने नहीं दिया ओर ए की जमीन है उसमें वो को चैक दे दिया उसमें फ्राड किया जिस तरह से पुलिस के बरबर हमले हुंए टाटा को जमीन न देने पर जिन्होंने विरोध किया उस सबकी वजह से टाटा के बारे में हम किलियरली जान गए थे। हम तो जो लोग टिस में पढ़ते हें उनसे चाहते हैं तुम टाटा के यहां पढ़ते हो अन्याय के खिलाफ बात करते हो तो उन्होंने कहा कि उस टाटा का नहीं रहा टिस। अब तो वो येजीसी फंडेड है। नाम अलबता है टाटा अब एक भी पैसा नहीं देता टिस में। हम

लोगों ने टाटा से पैसा नहीं लिया। बहुत सारी और भी एजेंसी हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि अब वो आती थी और ऐसे ऊटपटांग कार्यक्रम चलाना चाहती थीं।

साब आप ऐसा करिए कि हम लोग कंडोम बेचते हैं आप लोग वो करिए। हमने कहा हम वो सब नहीं करेंगे। अच्छा आप लोगक एड्स पर काम करिए हमने कहा हम वो भी नहीं करेंगे जो अभी जरूरी है वो करेंगे। नहीं किया हमने। जो हमारी प्रोप्रटीज थी उसपर काम किया। कोई भी आए और कहे कि ये काला काम करिए और चूंकि पैसा मिलरहा है तो हम ले लें तो हमने नहीं किया वो।

प्रश्न : फंडिग क्लीन होनी चाहिए जिससे जनता का सपोर्ट मिले।

विजय प्रतापः मैं इस मीटिंग के आरगेनाइजर के नाते पूरी बड़ी विनम्रता से कुछ बात कहना चाहता हूं ये जो सुबह का सत्र है ये हिमांशु जी क्या नजरिया है इन चीजों पर उसको जानने के लिए है उस पर निर्णय के लिए। नैतिकत मीटिंग बुलाइए हिमांशु जी भी उसमें अपराधी के तौर पर आने को तैयार होंगे जिस वैचारिक स्कूल में इनका प्रशिक्षण हुआ है ये उस जन अदालत में मैं इनकी ओर से गारंटी लेता हूं ये उस पर नैतिक निर्णय आज की इस मीटिंग में न दें कि माओवादियों से इनको बात करनी चाहिए थी कि नहीं इनसे ये अपेक्षा बदले में एक जो मैंने सुना मैंने जो ग्रहण किया जहां–जहां इनको कमियां थीं जो समझ नहीं आ रहा था। उसके बारे में भी उन्होंने इमानदारी से यहां हैं इनके कहने में अगर कहीं यदि अतिश्योक्ति आई हो। तो हम उस लिखित ट्रांसक्रिप्ट दे उसमें सुधार देंगे। जो इनके कहने में और लोगों को श्रेय दिया जाना चाहिए। स्थानीय लोगों को अ'न्य स्थानीय कार्यकर्ताओं को अपनी पत्नी को जो पहले सहकर्मिणी थीं दो चीजें उसमें जोड़ दी जाएंगी। लेकिन उस पर वैचारिक बहस और जिसकी मोरेलिटी वो इंर्पोटेंट सवाल हैं वो होने ही चाहिए हम लोग भी अपने अलग मंचों, गोष्ठियों में कहते ही हैं लेकिन ये एक तरह का ये साइंस डीएस की तरह से आरगेनाइज है जो एक रिसर्च इंस्ट्रीस्यूट है और जजमेंट का उसका कोई

उसका मॉरलत लोकस स्टैंडाई नहीं हैं और उसका कॉरपस फोर्ड के पैसे का बनाया हुआ है। फोर्ड का जो पचास–साठ साल पहले जो डवलपमेंट था भारत का प्लान था। वो एक तरह से कॉरपोरेट डिजाइन जिसको अगर कोई गांधीवादी माओवादी भाषा बोलने लगे कारपोरेट कांसप्रेसी भी उसका वो एजेंडा है तो हम तो अभी उसी के वैसे से अभी खाना भी खाएंगे आधे घंटे बाद। तो अपने बारे में ये स्पष्टता साथ होनी चाहिए जिस व्यवस्था का हम लोग हिस्सा हैं और उसका हिस्सा होने के कारण जो सरकारी नोकरियां करते हैं, बिजनेस करते हैं तो सब करते हैं जो हमारा गरीब आदमी टैक्स देता है; नमक खरीदने पर भी, प्याज खरीदने पर भी उस टैक्स से क्या पाप हमारा राज्य कर रहा है; गरीबों के प्रति और उस पाप में हमारी भागीदारी नहीं है। ये इन सवालों के पीछे जो कल्पना है जैसे आपके निर्णय हो सकते हैं वैसे औरों के भी जवाब हो सकते हैं और अगर वो करेंगे तो हिमांशु जी की जो सामझ हैं वो मौका नहीं होगा। ये सीएसडीएस द्वारा पॉलिटिकल डिस्कशन के लिए नहीं एक पॉलिटिकल परस्पेक्टिव एक सोशल वर्क का पर्सपेक्टिव क्या है, या हम डाक्यूमेंटेशन कर रहे। आपका कोई पॉलिटिकल प्लेटफार्म तो उसमें मीटिंग कीजिए और अगर आपका न हो तो हमारे हैं, इतने हैं कि हम चला नहीं पा रहे है ज्यादा हो गए हैं आप इनमें से कोई हैट पहन लीजिए और ऑरगनाइज़ कीजिए। हम उसमें ये सब चर्चाएं करेंगें। ये मेरी बातचीत में थोड़ा भाववेश आ गया है उसकी वजह है मैं निजी रुप से जानता हूं जिस तरह से कार्यकर्ता बनने के लिए किस तरह से पहले दिन से आदमी संकल्प करता है, रिश्तेदारों से क्या सुनना पड़ता है, दोस्तों से क्या सुनना पड़ता है और उसके बाद आपकी जो हैसियत सामाजिक हैसियत बनती है और आपकी जो जेब की असलियत होती है उसके बीच में कितना फासला होता है। आपसे अपेक्षा होती है कि आप दस लोगों को चाय पिलाएंगे और आपके पास अपना खाने का पैसा नहीं होता है, अपने किराया का पैसा नहीं होता और ये पूरी सरकार आपका मंत्री जो प्रफुल्ल पटेल के बारे में कैग ने कहा था ये तो फोरेन फ्लाइंग कॉरपोरेशन्स के लिए काम कर रहा था तो आपकी सरकार तो विदेशी कॉरपोरेशन्स के लिए काम करती है या उन हिन्दूस्तानी

कॉरपोरेशन्स के लिए काम करती हैं जो अफ्रीका के जंगलों में वैसा ही काम करता है जैसा चीन कर रहा है तो इसलिए हम लोग इन सवालों को दूसरे के लिए न रखें । अपने के लिए आपके मन में आ रहा हो बिना मॉरल जजमेंट दिये तो ये अपना कोई कार्यकर्ता होने या न होने अपने किसी कॉरपोरेशन में नौकरी की या जैसे मैंने लोकायन किया। मैंने 80 में जब लोकायन जाइन किया तो वो फंडिंग का था और समाजवादी बिरादरी में मुझे अछूत मान लिया गया इसी दृष्टि के चलते और आज भी मैं अछूत हूं उसके पीछे जो ढोंग चलता है मतलब हमारे देश का कोई भी आइकॉन पार्टी सिस्टम में कितने क्रिमिनल और भ्रष्ट लोगों से वो पैसा लेते हैं इसके बारे में कोई बहस की जरूरत नहीं हैं और एनजीओ सैक्टर में जहां चार तरह का ऑडिटर होता है रिज़र्व बैंक के और से अलग होता है, एनजीओ अपने ऑडिटर अलग होता, जहां से पैसा आता है वहां अलग ऑडिटर होता है, और उनके बारे में सोशल मूवमेंट के भी मैं पूरी विनम्रता से उनके काम के प्रति पूरा सम्मान है। किसी एक आयकोन था नाम लीजिए बनवारी लाल शर्मा बहुत सम्मानित हैं। मेरे गुरू की हैसियत से भी बड़े आदमी हैं, वो वंदना शिवा जो बड़ा पैसा लाती हैं विदेश से असके वालेंटियर के लिए भी चले जाएंगे लेकिन कोई गरीब घर का लड़का, कोई दलित, कोई मेरे जैसा निम्न मध्यम श्रेणी का लड़का अगर एनजीओ में काम करेगा तो उसे पब्लिक में भी ज़लील करेंगे कि ये तो एनजीओ वाला है। ये जो ढोंग है हमारे देश में विदेशी पैसे के बारे में, एनजीओ के बारे में और समाजिक कार्यकर्ता के प्रति जो पूर्ण असंवेदनाशीलता है कि उसको भी प्यार मोहब्बत करनी है, उसको भी शादी करनी है, उसको भी बच्चे पैदा करने हैं उसका पोषण करना हैं। इनके बारे में ये समाज संवेदन शून्य है । करीब–करीब संपूर्ण अर्थों में लो इन सवालों को हम बहस का हिस्सा बना पाएं इसलिए मैंने ये बैठक आयोजित की थी और इसकी जो पॉलिटिकल सवाल है उसके लिए यदि आपके पास मंच हो या मैं भी मंच प्रोवाइड कर सकता हूं और उसमें हम वो सब बात कर लेंगे।

प्रश्न– हिमांशु जी दिल्ली में बैठकर हमारी समझ मेंयह आया था कि जब ये राजपुताना राइफल्स को भेजने वाले थे, माओवादियों को मारने के लिए तो आर्मी के अंदर ही यह

आवाज उठाई की हम नहीं मारेंगे वो हमारे ब्रदर हैं और जो द्रोही हैं वो तो सरकार हैं। तो उनको मारने से पहले हम आपको मारेंगे और एक ऐसा फैक्स गया था दिल्ली से जिसकी कॉपी मेरे पास है। क्या वहां रहते हुए इसके बारे में आपको कोई जानकारी है ?

हिमांशु– मुझे तो सिर्फ इतनी जानकारी मिली की जब वहां भारत की सेना भेजने की बात हो रही थी, तो सेना के कुछ लोगों ने विरोध किया है। पर फैक्स के बारे में कोई जानकारी नहीं है। खासतौर से राजपुताना राइफ्ल्स के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

प्रश्न– राजपुताना राइफ्ल्स के बारे में तो बहुत आ रहा था कि उनको ट्रेनिंग दी जा रही है कि वो वहां जाएं उसके बाद जो जानकारी हमें यहां मिली कि एक सैनिक का संध है जो फौज में नहीं हैं पर जो फॉरमर हैं उन्होंने एक संघ बनाया है, उन्होंने जाकर इसका विरोध किया और जाकर फौज से कहा कि हम वहां नहीं जाएंगे और न हम अपने लोगों को वहां जाने देंगे, क्यूंकि उनकी गलती नहीं है। जो वहां डिवेलपमेंट नहीं हुआ इसके लिए ये हो रहा है और इसके बारे में आपको कोई जानकारी हुई थी या नहीं हुई थी?

हिमांशु– जैसा मैंने बताया कि हल्का–हल्का ये पता चला है कि भारत की सेना ने वहां जाने से मना किया है, लेकिन बाकी डिटेल्स नहीं पता। अब वहां सेना का एक ट्रेनिंग कैम्प और सेना की प्रेजेन्स वहां की जा रही है। और अब सेना तैयार हो गई है।

प्रश्न– उसके बारे में भी जानकारी आई थी कि ट्रेनिंग कैम्प लग रहा है कि अब तो देश में ये पता लग गया है कि हमारी जिस तरह की सरकार है ये इसका ट्रिक्लडाउन इफैक्ट डिवेलपमेंट में जैसा पहले राजीव गांधी ने कहा था 15 प्रतिशत है और राहुल गांधी ने कहा 5 प्रतिशत है। अब तो हम सबको ये पता लग गया है कि वहां कोई

डेवेलपमेंट नहीं हो रहा है। कोई वैध विकास नहीं हो रहा है सरकार द्वारा सिर्फ करपशन कर रही है।

प्रश्न (औरंगाबाद प्रोफेसर)– पिछले एक साल से जो प्रक्रिया चल रही है, दो दिन पहले स्वामी अग्निवेश को दांतेवाड़ा में जाने से रोका और दूसरा जो विनायक सेन के छूटने के बाद छत्तीसगढ़ की सरकार में रामसिंह ने कितना अपना पर्सनल मुद्दा बना दिया है। सरकार शर्मानाक तरीके से जो कुछ कर रही है.....।

हिमांशु– हम जो ताकतवर लोग हैं। समाज के और समाज तो सबका है, लेकिन इसमें कुछ लोग बहुत ताकतवर हो जाते हैं और समाज उनका भी है और जो कमजोर हैं उनका भी है।

ताकतवर तबका है जो खासतौर से समाज के कारण ताकतवर है, शहर में रहने की वजह से ताकतवर है। गांववाला कमजोर है। ऊंची जाति वाला ताकतवर है। छोटी जाति वाला कमजोर है। जो उत्पादक है वह कमजोर है और जो उपभोक्ता है वह मज़बूत है। अब सारी पुलिस हमारे लिए काम करेगी। मजबूत लोगों के लिए सारी सरकार मजबूत लोगों के लिए काम करेगी। और हमारे ही विकास के लिए सारे संसाधनों का उपयोग किया जाएगा, तो जो हम मजबूत लोग हैं वो सारे संसाधनों को लूटेंगे। अब वो संसाधन जिसके पास है उसपर हमला करेंगे। और इसमें जो भी हमारी इस लूट का विरोध करेगा, उसको हम विद्रोही, माओवादी, नक्सलवादी, विद्रोही, देशद्रोही कहकर मार डालेंगे। ये हमारे बहानेबाजी है कि जो भी तुम्हारी इस लूट के बीच में आए उसकी लेजीटीमेसी समाज में खत्म कर दो। उसे अपराधी सिद्ध कर दो और उसे मार डालो तो जो आदमी, हमारी तो छत्तीसगढ़ का जनसुरक्षा अधिनियम कहता है कि ये अधिनियम किनके खिलाफ है। ये अधिनियम है देशद्रोहियों के खिलाफ और विकास विरोधियों के खिलाफ। वो क्लियरली कह रहा है, इसमें कोई छुपी हुई बात ही नहीं है। विकास विरोधियों के खिलाफ है और विकास विरोधी कौन हैं जो टाटा के विकास के विरोधी हैं जो रमन सिंह के विकास के विरोधी हैं। वो ये थोडे न

ही कह रहे हैं कि आदिवासी की शिक्षा बढ़े। उसके विकास का विरोध करने वाला विरोधी है। वो तो ये खुद कर रहे हैं। तो बात बिल्कुल साफ है। आज जो हालात है कि आप आदिवासी क्षेत्रों में घुस ही नहीं सकते। इंटरनेशनल रेडक्रॉस जिसके ऊपर दो देशों की लाड़ई के बीच में कोई गोली नहीं चलाता है तो वहीं दंतेवाड़ा में उन्हें नक्सली कहा गया है। पूछिये इनसे। एनएसएस को नक्सली कहा गया है। पूछिए कलैक्टर को नक्सली कहा, स्वामी अग्निवेश को नक्सली कहा है, प्रोफेसर यशपाल, बनवारी लाल शर्मा, उनका जलूस निकाल दिया दंतेवाड़ा में। आप आज उस आदमी के ऊपर हम जिसकी जमीन छीनने के लिए संसाधन छीनने के लिए समाज हमला करेगा। यू.पी के किसान के साथ आप खड़े नहीं हो सकते। उनके नेता को हम अपराधी कहेंगे, बदमाश कहेंगे, उसके सिर पर पचास हज़ार का ईनाम रख देंगे। राहुल गांधी भी जाएगा तो उसको भी गिरफ्तार कर लेंगे। कोई किसान के साथ नहीं खड़ा हो सकता। और ये सिर्फ दंतेवाड़ा में नहीं है कि जहां **लिंगा** जैसे लड़के को गांव से भागना पड़ता है। पूरे हिन्दुस्तान में अगर आज पुलिस की नज़र है तो वो गांव के नौजवान के ऊपर। गांव के सारे नौजवान डरे हुए हैं। मां–बाप उन्हें बाहर भेज देना चाहते हैं कि, तुम जाओ शहर में यहां मार डालेगी पुलिस तम्हें। क्योंकि हमला पूरे गांव पर है। हमें गांव के संसाधन लूटने है। वहां कार्यकर्ता रहेगा वो कानून सिखाएगा इसलिए गांव में कार्यकर्ता नहीं चाहिए। पुलिस पर उसका हमला है। तंत्र का उसपर हमला है। उसको फंडिंग एजेंसिया भी विद्ड्रा कर रही है कि भैय्या ऐसी जगह में हम पैसा देंगे ही नहीं जहां सरकार लोगों पर हमला कर रही है तो धीरे–धीरे ये लूट बहुत एक्यूट होती जा रही है और इसमें क्लास बार की जो श्योरटी है वो बहुत रेलेवेंट होती जा रही हैं। हम लोग कोशिश कर रहे थे कि जो गांधी की थ्योरी है वर्ग समन्वय की, जो विनोबा की थ्योरी थी कि लोग समझें कि ये तरीका शोषण का, लूट का कि समाज में कुछ लोग सारे संसाधनों को अपनी ताकत के बल पर कब्ज़ा कर लें और लूट लें तो ये थ्योरी रही तो समाज में युद्ध होगा। ये नहीं और गांधी ने जो ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त दिया कि जो पैसा है वो ये मानें कि मेरे पास जो पैसा है वो सारे समाज का है और मैं उतना ही खर्च कर सकता हूं जितना एक व्यक्ति पर हो सकता है बाकी तो

समाज का है तो न हो ये वॉर लेकिन हम यह मान ही नहीं रहे। हम तैयार ही नहीं हैं। गांधी को रिजेक्ट कर रहे हैं। वर्ग समन्वय को रिजैक्ट कर रहे हैं और धीरे–धीरे हमला करते जा रहे हैं। 80 प्रतिशत लोगों के ऊपर और हमें यह समझ नहीं आ रहा कि हम हमला करेंगे तो पलट कर भी हमला आएगा। और क्लास वॉर का जो सिद्धान्त हैं ये तो हो ही नहीं सकता कि कभी जिनके दांतों में खून लग गया है वो कभी सुधर जाएं। इनकी तो हत्या ही करनी पड़ेगी। इनको तो मारना ही पड़ेगा और ये क्लासवार जरूरी है। ये जो सिद्धान्त हैं हम इसको बहुत रेलेवेंट करते जा रहे हैं। सिद्ध करते जा रहे हैं कि हां साब। गांधी को मारने वाले लोग समाज में ये लेकर निकलते हैं कि हम वार नहीं समन्वय स्थापित करेंगे। समाज में, शहर के लोग भी समझें हम समझाने की कोशिश करते हैं उसको शहर के ही लोग हम लोगों पर हमला करते हैं। जो हम पढ़ रहा हैं, अखबारों में फेसबुक में जितना ज्यादा पढ़े–लिखे लोग विनायक को गाली दे रहे हैं प्लानिंग कमीशन में नियुक्ति को लेकर के, जितना डिस्टर्ब तथाकथित राष्ट्रवादी लोग हैं कोई नहीं हैं। कोई आदमी गरीब की तरफ से बोले। युद्ध को टालना चाहें कि युद्ध न ले लोगों को लोकतंत्रिक अधिकार को मान्यता दो गैर कानून तरीके मत अपनाओ संविधान को मानो इसकी इज़जत करो इसे बचा रहने दो। क्योंकि यदि संविधान खत्म हुआ तो मुसीबत में तम्हीं पड़ोगे, तो समझ में ही नहीं आ रहा है। हम बड़े खुश है कि बस्तर में संविधान का पालन नहीं हो रहा है और रगड़ दो इन नक्सलियों को। हम बड़े खुश हैं कि कल्लूरी का ही स्टाइल चलेगा। हमारी फिल्में भी ऐसी आती हैं जिसमें हीरो पुलिस ऑफिसर होता है और बंदूक निकालता है और ठांय ठांय ठांय मार देता है और कहता है कि कोर्ट में से तो ये बच जाएंगे, इसलिए मार दो इनको। इसलिए हम खुश होते हैं और ताली बजाते हैं। वो हमारे समाज का स्वीकार्य मूल्य है आज। सीधा एन्काउंटर कर देना हमारे समाज का स्वीकार्य मूल्य हो गया है आज। तो हम किस तरह बढ़ रहे हैं। हमारी पॉलिटिक्स हमारे मूल्य, हमारी आर्थिक व्यवस्था ये किस हिंसक और आत्माघाती परिस्थितियों में हमको ले जा रही है इसको इस वक्त समझना बहुत जरूरी हैं। क्योंकि हिंसा उधर भी हो रहा है जिनके ऊपर हम कर रहे थे।

प्रश्न– अपने अनुभवों से क्या कुछ रोशनी डालेंगे, जिन क्षेत्रों में आप काम कर रहे थे उनमें जिस तरह के उनके चलन है, हैल्थ को लेकर ये हो, वाटर को लेकर के ही, चाहे सैनिटेशन को लेकर के हो बहुत पुराने हैं और उसके आपने तरीके बने हुए हैं तो आज जो उस जगह जाते हैं और चेंज करना चाहते है तो क्या आपने रैज़िस्टेंस फेस करी। आपके कम्युनिकेशन का क्या तरीका था।

हिमांशु– बड़ा मजा आता था। फंड़िंग एजेंसियों का तरीका बड़ा पुराना होता है। उनका मानना है गांव में गाने गाइये, नाटक दिखाईये। मैंने कहा कि ये तो उन लोगों की जरूरत होती है जो वहां के लोगों को जानते न हों और लोग उन्हें न जानते हों। आपको किसी गांव के लोग नहीं जानते। तो आप लोग गए और वो लोग आ नहीं रहे आपके पास तो आप ढोल बजाने लगते हैं तो लोग आ जाते हैं कि ये ढोलक कौन बजा रहा है। तो फिर आप नाचने लगते हैं तो लोग बैठ जाते हैं और फिर आप अपना भाषण शुरू करते हैं और मैंने कहा वो तो आ गया मेरे गांव में पहुंचते ही मुझे गुरूजी कहकर बैठ गये सारे औरत में कहूंगा नहीं अभी तो मैं नाचूंगा। वो तो सुनने के लिए तैयार हैं। मेरे तरीके मेरे हैं। जो मैंने डिवेलप किये हैं। मैने 18 साल से इनके साथ काम कर रहा हूं इनके बच्चे बीमार होते है तो मैं मोटर साइकल में बिठाकर डॉक्टर के पास ले जाता हूं, इनके यहां शादी होती है तो उसमें इनके यहां बैठता हूं खाना खाता हूं। मेरे यहां बच्चे का जन्मदिन होता है तो ये सब आते हैं तो मुझे तो जरूरत ही नहीं है इनके बीच नाचने की । दूसरा जहां इंजैक्शन लगाने की बात है तो हम कहते थे कि पहले दवाई खाकर देखो यदि ठीक नहीं होगे तो इंजैक्शन लगा देंगे। फिर घीरे–घीरे जब कोई नया आदमी यह कहता था कि इंजैक्शन लगा तो पुराना आदमी कहता था कि इसकी गोली में भी उतना ही असर है जितना इंजैक्शन में है। वो उनको समझाते थे। पर साइक्लोजिकल असर की बात है हम अपने आश्रम में भी वो ही क्लोरोक्वीन की गोली देते थे जो सरकारी हस्पताल में देते हैं पर लोग हमारे आश्रम में ही आते थे। उनको शायद सिम्पेथी और विश्वास हम पर होगा। हम जिसको दवाई

दे देते थे वो ठीक न हो ऐसा कम ही हुआ। और मैंने तो वहां बहुत प्रयोग किये बायोकैमिकल के प्रयोग किये। और बायोकेमिकल के मरीज़ तो बड़े–बड़े डॉक्टर भी रहे। कई डॉक्टर ऐसे थे जो कहते थे एंटीबायटिक खाकर हम थक गये। खांसी ठीक नहीं हो रही। और बायोकेमिकल दे दीजिए और मैंने बायोकैमिकल देकर कई डॉक्टरों की खांसी ठीक की। बहुत सारे लोगों की क्रॉनिक 12–12 सालों का पेट दर्द ठीक किया। तो एक किस्सा तो ऐसा था कि एक महिला का पूरा हाथ सड़ गया था। हम लोग गांव गये तो देखा झाड़फूक चल रही है। हमने पूछा क्या हुआ? तो उन्होंने कहा आपने आप जादू कर दिया है किसी ने। तो हमने देखा तो एक गंदा सा कपड़ा लपेटे हुए था। हमने कहा पानी थोड़ा उबाल कर ठंडा करो और फिर उससे धोया तो देखा कि उसकी हड्डी के भी रेशे निकल रहे थे। तो हमने कहा चलो और हम साइकिल पर लेकर दंतेवाड़ा पहुंचे। तो डॉक्टर ने कहा कि हाथ काटना पड़ेगा। उसको पता चल गया कि हाथ काटना पड़ेगा। वो उठकर वहां से भाग गई रात को। और अगले दिन वो हमारे यहां आ गई कि पट्टी कर दो। मैंने कहा ये तो मर जाएगी। शरीर में जहर फैल जाएगा और मुझे पुलिस पकड़ कर ले जाएगी वो बोलेगी तुम डॉक्टर हो जो उसकी पट्टी कर रहे थे वो दो चार घंटे वहां से गई नहीं। बहुत से लोगों ने कहा कर दो, मैंने पट्टी कर दी और बॉयोकैमिक भी दे दी, और वो दूसरे दिन फिर आ गई और मैंने फिर पट्टी कर दी और बॉयोकैमिक दे दी। इस तरह वह दस पंद्रह दिन आती रही और मै हर रोज़ उसकी पट्टी करता रहा और उसको बायोकैमिक खिलाता रहा फिर उसने आना छोड़ दिया और मैं भी भूल गया। छह महीने बाद मैंने कहा वो औरत मर–मुरा गई होगी। तो मैंने पता किया कि वो केशवपुर की औरत आती थी उसका क्या हो तो वो बोले दो तो ठीक है खेत में काम करती है। घास काटती है। उसका हाथ ठीक हो गया। जिसकी डॉक्टर ने कहा था हाथ एम्प्यूरटेट करना पड़ेगा। वो ठीक हो गई। इस तरह से होता है।

प्रश्न– ये जो क्लासवार है वो पॉलिटिशियरन कैपिटलिस्ट सब मिले हुए थे और ये क्लास पीस के खिलाफ है., पीपुल के खिलाफ है इसका सॉल्यूशन क्या है? हमें विकास भी चाहिए पीस भी चाहिए। आपका इंसाइट क्या है?

विजय प्रताप– आज पॉलिटिक्स सवाल न करें.....

हिमांशु– जब आप लोगों के साथ लंबे वक्त तक रहते हैं तो वे बिल्कुल आपके जैसे हो जाते हैं। तो जो हमारी रिलेशनशिप समाज के साथ थी चूंकि हम उनके बीच में रहते थे तो कोई ऐसे उन एनजीओ वाले नहीं थे जो जीप में बैठकर गांव में आते हैं और कुछ भाषण देकर चले जाते हैं। वैसी रिलेशनशिप तो रही ही नहीं और मैं वहां की भाषा बोलता था। और इतनी फर्राटे से बोलता था कि कई बार लोग पूछते थे कि आप कौन से अदिवासी हैं। आपका गोत्र क्या है? मैं बोलता था मैं आदिवासी नहीं हूं आपको पैदाइश बस्तर में कहां की है तो मैं कहता था कि मैं तो यूपी का हूं तो वो माथा पीटकर बोलते थे कि जो हमारे बच्चे हैं वो भी थोड़ा हिंदी मिक्स कर देते हैं लेकिन आप बिल्कुल शुद्ध और फर्राटे से बोलते हैं और आपका लहज़ा भी बिल्कुल यहीं का है। तो वहां की जो महिलाएं होती थीं लोग होते थे वो महसूस करते थे कि मैं उन्हीं की बात कर रहा हूं और जो वहां के बच्चे होते थे हमने बहुत से बच्चों को वहां स्कूल भेजा, बहुत से हमारे कार्यकर्ता भी बने। कुछ पंचायतों में गए कुछ सरकारी नौकरियों में चले गए। तो जब हम वहां काम करते थे तो एक जनरल हमारे बारे में एक अच्छा एटमासफियर वहां था और आज भी है। इसीलिए आज भी वहां अगर पत्ता भी खड़कता है तो मुझे यहां पता चलता है। इसलिए सरकार जब ये कोशिश करती है कि वो दंतेवाड़ा में गुपचुप कर ले तो वो कर नहीं पाती, क्योंकि पत्रकार कहते हैं आपका नेटवर्क आज भी बहुत स्ट्रांग हैं । तो हमने कहा वे हमारे सब घर के लोग हैं।

प्रश्न (मुद्गल जी)– सामाजिक कार्यकर्ता जब काम करने के लिए चुनाव करता है तो समाज की तरफ से रिश्तेदार की तरफ से काफी विरोध होता है, कि क्या बेवकूफी का

काम शुरू कर दिया और करने के बाद जब हमारी जैसे आपके जैसी उम्र में जब लगता है कि किये धरे पर पानी फिर गया तो उसके बाद उसी समाज के लोगों के ताने फिर शुरू हो जाते हैं। ऐसी स्थिति क्या हमने वैसे बहुत से कार्यकर्ताओं से बात की ?क्या आपको ताने सनने पड़े?

हिमांशु– एक्टीविस्ट अपने चारों ओर एक खोल बाना लेता है और वो ये कहता है कि दुनिया उसे बेवकूफ समझती है और वो दुनिया को बेवकूफ समझता है। उसको ये लगता है कि ये सब बेवकूफ हैं। और ये समझते ही नहीं है कि असली बात क्या हैं और दुनिया हमें बेवकूफ समझती रहती है और उसी में जिन्दगी कट जाती है।

प्रशन– महिलाओं का क्या रहा? बच्चे और महिलाएं बहुत सफल रही। जैसे आपने बताया। आपके कार्यकर्ताओं में महिलाओं का अनुपात क्या था ?

हिमांशु– हमारे यहां महिलायें पुरूष में 70 और 30 का अनुपात था। 70 प्रतिशत महिला कार्यकर्ता थे और 30 प्रतिशत पुरूष। सरकार और पुलिस भी वो हमारे ऊपर बहुत तरह के इल्ज़ाम लगाती थी कि ये हम प्रोस्टीट्यूशन का धंधा करते हैं। नक्सलाइटों के लिए जिस दिन आश्रम तोड़ा है मेरे यहां 4 स्टूडेंट थे। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सांइस के। उनको पीटा, जावेद इकबाल जो इंडीपेंडेंट पत्रकार हैं उन्हें पीटा क्योंकि वो जले हुए गांवो में घुस कर रिपोर्ट और फोटो प्रकाशित करता था। मेरा भांजा, जो मेरे जीजाजी ट्राइबल थे उनका बेटा। मेरा बड़ा भांजा ट्राइबल है और छोटा भांजा मुस्लिम है और वो भी था उसको भी पीटा और इन सबसे कहा कि अगर तुम लोग यह कह दोगे कि रात को नक्सलाइट आते थे और हिमांशु उन्हें खाना देता था और यहां वेश्यावृत्ति का अड्डा चलता था तो तुम्हें छोड़ देंगे। जितनी गंदगी ये लोग कर सकते थे करते। हमारे जो महिलाएं थीं वो इतनी स्ट्रांग थी और हमारी संस्था बाद में उन्हीं से ड्रिवन थी। कब रैली करनी है कहां करनी है किस मुद्दे पर लड़ना है वो सारा हमारी महिला कार्यकर्ता और बाद में महिला कार्यकर्ताओं से भी आगे चली गई थी बात। गांव की

महिलाएं तय करती थी कि अब रैली करनी है उसके पीछे हमारे कार्यकर्ता और उसके पीछे हमारी संस्था। पहले संस्था आगे थी, कार्यकर्ता उसके पीछे थे और कम्यूनिटी उसके पीछे थे बाद में यह हालत हो गई थी कि कम्यूनिटी आगे थी कार्यकर्ता उसके पीछे और संस्था सबसे पीछे थी। यहां पर हमको वहां से छोड़ना पड़ा।